साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 23-29 दिसंबर 2024 वर्ष-10, अंक-36

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8,मूल्यः- 2 रुपए

देशभर में किसान सिंचाई के लिए बिजली कनेक्शन की समस्या से जूझ रहे

किसानों के लिए खुशखबरी, सिर्फ 5 रुपए में मिलेगा स्थायी कृषि पंप कनेक्शन

भोपाल। जागत गांव हमार

देश में बड़ी संख्या में किसान कभी सिंचाई के लिए पानी की कमी, बिजली, कृषि पंप जैसी समस्याओं से जूझते हुए खेती कर फसल उगाते हैं। इन व्यवस्थाओं को बनाने में ही उनकी सारी ऊर्जा लग जाती है। सिंचाई को लेकर अक्सर किसान बिजली कनेक्शन न मिलने की शिकायत भी करते हैं। लेकिन, मध्य प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में किसानों की यह समस्या अब दूर होने जा रही है। यहां के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी अपने कार्य क्षेत्र में किसानों को अब मात्र 5 रुपए में स्थायी कृषि पंप कनेक्शन देने जा रही है। बिजली कंपनी के अनुसार, कृषि पम्पों के कनेक्शनों की संख्या बढ़ाने के लिए बिजली लाइन के करीब खेत वाले किसानों को सुविधानुसार आसानी से स्थाई कृषि पंप कनेक्शन दिया जाएगा।

जल्द शुरू होगी आवेदन प्रक्रिया

मध्य प्रदेश विद्युत नियामक आयोग की ओर से जारी नियमों के अनुसार, अब लो टेंशन (एलटी) पोल से उपभोक्ताओं द्वारा स्थापित होने वाली सर्विस लाइन में सुरक्षा नियमों की जांच कर 5 रुपए मात्र में ग्रामीण क्षेत्र में नया स्थाई कृषि कनेक्शन दिया जाएगा। बिजली कंपनी सरल संयोजन पोर्टल के माध्यम से उपभोक्ताओं का कनेक्शन का फार्म भरने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इसमें 1200 रुपए प्रति हॉर्स पॉवर सुरक्षा निधि उपभोक्ता (किसान) के पहले बिल में जोड़ी जाएगी।

सवा लाख अस्थाई कनेक्शन का प्लान

सीएम मोहन यादव ने राज्य के विकास को लेकर रोडमैप की जानकारी दी थी। उन्होंने कहा कि सरकार प्रदेश की इकोनॉमी को दोगुना करेगी। इसके लिए अगले चार साल में एक लाख 25 हजार अस्थाई बिजली कनेक्शन वाले किसानों को सोलर पंप दिए जाएंगे। इससे किसान बिजली आपूर्ति में आत्मनिर्भर बनेंगे। सीएम मोहन यादव ने कहा कि अगले पांच साल में सिंचाई क्षमता 50 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर एक करोड़ हेक्टेयर की जाएगी। इसके अलावा जो पशुपालकों 10 गायों से अधिक गाय का पालन करेंगे उन्हें सब्सिडी दिया जाएगा।

डीजल पंप पर निर्भर किसान

देश में बड़ी संख्या में किसान आज भी बिजली कनेक्शन के अभाव में डीजल पंप का इस्तेमाल करते हैं, जिससे प्रदूषण तो बढ़ता ही है। साथ ही उनकी खेती की लागत भी बढ़ती है, क्योंकि खर्च का एक बड़ा हिस्सा डीजल खरीदने में लग जाता है। वहीं, सरकार अब कई जगहों पर सोलर पंप की सुविधा भी उपलब्ध करा रही है। ऐसे में जहां बिजली पहुंचना मुश्किल है। वहां सोलर पंप के इस्तेमाल से किसानों की सिंचाई के पानी की व्यवस्था हो जाती है। सोलर पंप डीजल के मुकाबले बहुत ही किफायती होते हैं।

प्रधानमंत्री की उपस्थिति में परियोजना के अनुबंध सहमति पत्र पर जयपुर में हुए हस्ताक्षर

मध्यप्रदेश को सुजलाम-सुफलाम बनाएगी पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना

» सीएम यादव बोले-मप्र और राजस्थान के लिए आज का दिन ऐतिहासिक

» मप्र-राजस्थान में किसानों को फायदा सिंचाई के लिए पानी मिलेगा

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना मध्य प्रदेश और राजस्थान दोनों राज्यों को सुजलाम-सुफलाम बनाएगी। आज यहां पर मध्य प्रदेश राजस्थान और केंद्र सरकार के बीच जो अनुबंध सहमति पत्र हस्ताक्षरित हुआ है, वह सामान्य सहमति पत्र नहीं है, यह आने वाले कई दशकों तक याद रखा जाएगा। इसके लिए मध्यप्रदेश और राजस्थान सरकार तथा जनता सभी बधाई के पात्र हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि परियोजना पर बिना रुके काम आगे बढ़ता रहेगा और समय से पहले परियोजना पूरी होगी। दरअसल, प्रधानमंत्री मंगलवार को जयपुर में राजस्थान सरकार के 1 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर आयोजित विकास कार्यों के लोकार्पण/भूमिपूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल और मध्यप्रदेश के सीएम डॉ. मोहन यादव विशेष रूप से उपस्थिति रही। प्रधानमंत्री की मौजूदगी में परियोजना के अनुबंध सहमति पत्र पर मध्य प्रदेश राजस्थान और केंद्र सरकार की ओर से हस्ताक्षर किए गए। इसके पहले मोदी ने चंबल नदी के जल से युक्त कलश के जल को एक बड़े कलश में प्रवाहित किया। इसके बाद उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. मोह यादव द्वारा दिए गए कालीसिंध नदी के जल से युक्त कलश के जल और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा दिए गए पार्वती नदी के जल से युक्त कलश के जल को भी उसी बड़े कलश में प्रवाहित किया।

पूर्व सरकारों ने उलझाए रखा

प्रधानमंत्री ने कहा कि पूर्व पीएम स्व. अटल बिहारी वाजपेई ने नदियों को जोड़ने का विजन (सपना) रखा था और उसके लिए विशेष समिति भी बनाई गई थी। नदियों को जोड़ने की योजना तो बन गई पर उन्हें पूर्व सरकारों ने उलझाए रखा। परंतु हमारी सरकार विवाद नहीं- संवाद की, विरोध नहीं- सहयोग की नीति पर कार्य करती है। इसी का परिणाम है कि आज पार्वती- कालीसिंध -चंबल लिंक परियोजना के अनुबंध पत्र पर हस्ताक्षर हुए हैं। परियोजना के अंतर्गत चंबल व उसकी सहायक नदियों पार्वती, कालीसिंध और चम्बल को आपस में जोड़ा जाएगा।

बाढ़ और सूखे का होगा समाधान

पीएम मोदी ने कहा कि नदियों को जोड़ने से बाढ़ और सूखे दोनों समस्याओं का समाधान संभव है। हम जल के महत्व को समझाते हैं। पानी पारस है, जहां भी स्पर्श करता है, नई ऊर्जा व शक्ति को जन्म देता है। यह नदियों के पानी को जोड़ने का ही परिणाम है कि साबरमती नदी जो एकदम सूख गई थी, आज फिर से सजीव हो गई है। पार्वती- कालीसिंध -चंबल लिंक परियोजना से दोनों राज्यों को सिंचाई और पेयजल के लिए पर्याप्त पानी मिलेगा।

मध्यप्रदेश-राजस्थान का मंगल

मध्यप्रदेश और राजस्थान के लिए यह एक ऐतिहासिक दिन है। मध्यप्रदेश 20 वर्षों के इंतजार और उपेक्षा के बाद यह परियोजना पूर्ण हो सकी है। राजस्थान और मध्यप्रदेश के चंबल और मालवा क्षेत्र के लिए यह एक अद्वितिय योजना है। मुख्यमंत्री जयपुर में पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ो परियोजना के शुभारंभ अवसर पर प्रधानमंत्री को धन्यवाद देते हुए कहा कि मध्यप्रदेश और राजस्थान की वर्तमान सरकार के एक वर्ष पूरा होने पर इससे बड़ा तोहफा कोई दूसरा नहीं हो सकता, जिसे देने के लिए प्रधानमंत्री स्वयं आए।

90 फीसदी राशि केन्द्र से

केन्द्र द्वारा स्वयं 90 प्रतिशत की राशि इस परियोजना में मध्यप्रदेश और राजस्थान को मात्र पांच-पांच प्रतिशत ही व्यय करना होगा। 77 हजार करोड़ की इस परियोजना इस परियोजना में 70 हजार करोड़ की राशि केन्द्र द्वारा और साढ़े तीन-तीन हजार करोड़ मप्र औरराजस्थान सरकार व्यय करेगी।

हर गांव पहुंचेगा पानी

परियोजना से श्योपुर, भिंड, मुरैना, शिवपुरी, गुना, अशोक नगर सहित आगर, इंदौर, धार, उज्जैन, शाजापुर, राजगढ़, सीहोर इत्यादि संपूर्ण पश्चिमी मध्यप्रदेश में पीने के पानी और सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था रहेगी।परियोजना से प्रदेश के 3217 ग्रामों को लाभ मिलेगा। मालवा और चंबल क्षेत्र में 6 लाख 13 हजार 520 हेक्टेयर में सिंचाई होगी।

देश में 65 फीसदी लोग कृषि से जुड़ी गतिविधियों से जुड़े

किसनों को केमिकल खतरों से बचाएगा किसान कवच

भोपाल। जागत गांव हमार

फसलों में केमिकल युक्त कीटनाशक छिड़काव समेत कृषि गतिविधियों में दवाओं के इस्तेमाल से किसानों के स्वास्थ्य को होने वाले हानिकारक खतरों से बचाने के लिए किसान कवच को लाया जा रहा है। यह स्वदेशी बॉडीसूट है जिसे पहनकर खेती कार्य किए जा सकेंगे और किसी भी तरह के स्वास्थ्य नुकसान से किसानों और ग्रामीणों को बचाया जा सकेगा। इस बॉडीसूट में ऐसे कपड़े और तकनीक का इस्तेमाल किया गया है कि यह कीटनाशक को शरीर में घुसने से पहले ही नष्ट कर देता है। इसे धोकर बार-बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

हर साल करीब 30 करोड़ किसान केमिकल युक्त कीटनाशकों और दवाओं के संपर्क में आकर त्वचा, सांस समेत अन्य तरह की बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। इन खतरों से किसानों को बचाने के लिए बेंगलुरू की कंपनी ने सेपियो हेल्थ प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से कीटनाशक रोधी बॉडीसूट किसान कवच विकसित किया है। कंपनी की ओर से जारी मीडिया स्टेटमेंट में कहा गया है कि यह बॉडीसूट किसानों को कीटनाशकों से होने वाले स्वास्थ खतरों से बचाने में मदद करेगा। इसे केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह 17 सितंबर को लॉन्च करेंगे।

कीटनाशक को नष्ट करता है सूट

कंपनी की ओर से कहा गया है कि किसान कवच कीटनाशकों से होने वाले घातक खतरों से किसानों के स्वास्थ्य की रक्षा करने वाली अपनी श्रेणी की पहली तकनीक है। किसान कवच बॉडीसूट को कीटनाशक से होने वाले टॉक्सिक खतरे को रोकने के लिए एक कीटनाशक विरोधी सूट है। इस बॉडीसूट में ऐसे कपड़े और तकनीक का इस्तेमाल किया गया है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक कीटनाशक को शरीर में जाने से रोकता है और खतरनाक तत्वों को नष्ट कर देता है।

बीमारियों का शिकार बनते हैं किसान

देश में बड़ी संख्या में लोग कृषि कार्य करते हैं। देश में लगभग 65 फीसदी लोग सीधे कृषि और इससे जुड़ी गतिविधियों में लगे हुए हैं। भारत और विकासशील देशों के किसान खेतों में छिड़काव करते समय त्वचा और नाक के रास्ते जहरीले कीटनाशकों के संपर्क में आते हैं। कीटनाशकों में न्यूरोटॉक्सिन होते हैं, जो ह्यूमन बॉडी को खतरनाक बीमारियों से ग्रसित कर देते हैं। इससे बुखार, मांसपेशियों में दर्द, उल्टी, सांस लेने में दिक्क त, कंपकंपी, देखने में दिक्क त जैसे खतरे देखने को मिलते हैं।

एक साल तक इस्तेमाल कर सकते हैं किसान

वर्तमान में कीटनाशकों को शरीर में जाने से पहले रासायनिक रूप से निष्क्रिय करने के लिए कोई भी तकनीक मौजूद नहीं है। इस जरूरत को पूरा करने और किसानों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए किसान कवच को बाजार में लाया जा रहा है। किसान कवच बॉडीसूट को आसानी से धोया जा सकता है और दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है। इस बॉडीसूट का इस्तेमाल किसान कम से कम एक साल तक कर सकते हैं।

सब्जियों के भाव में 15 दिनों में दोगुना इजाफा, गोभी और बैगन के दाम 20 से 40 रुपए किलो

मुरैना में दोगुने हुए गोभी के दाम, मटर 100 रुपए के पार

मुरैना। जागत गांव हमार

कड़ाके की ठंड में सब्जियों के भाव में आग लगी हुई है। यह समय सब्जियों की बंपर आवक का होता है। इस साल मटर को छोड़कर अन्य सब्जियों की खूब आवक हो रही है, फिर भी भाव लगातार बढ़ते ही जा रहे हैं। हरे धनिया को छोड़कर सभी सब्जियों के भाव 15 दिनों में ही दोगुने तक बढ़ गए हैं, इससे हर घर का बजट गड़बड़ाया हुआ है। 10 दिन पहले जो फूलगोभी और पत्तागोभी 20 रुपए किलो के भाव में बिक रही थी, वह अचानक से 40 से 50 रुपए किलो तक जा पहुंची हैं। यही हाल बैगन के हैं, जो आधा महीने पहले 20 रुपये के भाव था, वह सब्जी मंडी में अब 40 रुपए किलो के भाव का हो गया है। हरी सब्जियों की तरह आलू के भाव भी उल्टे पांव चल पड़े हैं। दीपावली के समय से ही मंडी में नए आलू की आवक होने लगी। 15 दिन पहले आलू के भाव 120 रुपए पसेरी (पांच किलो) थे, जो अचानक से 160 रुपए पसेरी हो गए हैं। मैथी, बथुआ, पालक जैसी अन्य मौसमी सब्जियों के भी यही हाल हैं।

सब्जी	पहले का भाव	ताजा भाव	सब्जी	पहले का भाव	ताजा भाव
बेगन	20	40	नीबू	60	80
मिर्ची	30	40	मैथी	20	30
सेंगरी	60	80	पालक	20	30
सेम	60	80	टमाटर	20	30
			गाजर	30	40

मिर्ची और गाजर के दाम

बेगन, मिर्ची, सेंगरी, सेम, नीबू, मैथी, पालक, टमाटर और गाजर जैसी सब्जियों के दाम में इस बदलाव को देखा जा सकता है। मिर्ची और सेंगरी भी 30-40 रुपए से बढ़कर 40-80 रुपए किलो तक पहुंच गए हैं। इसके अलावा, गाजर के दाम भी 30 से 40 रुपए किलो हो गए हैं। बेगन का दाम 20 रुपए किलो से बढ़कर 40 रुपए किलो हो गया है।

मटर की आवक लेट, 100 के पार

सर्दी के दिनों में आलू-मटर की सब्जी हर घर की पसंद होती है, लेकिन इस बार मटर की सब्जी गरीब तो छोड़िए मध्यमवर्गीय परिवारों की थाली से भी दूर है। कारण यह है, कि मटर के भाव 100 रुपए किलो से कम हो ही नहीं रहे। हर साल दीपावली से पहले सब्जी मंडी में जमकर मटर आने लगती थी, लेकिन इस बार मटर की आवक दिसंबर के पहले सप्ताह से हुई है। अभी भी बाजार में मटर की आवक कम है, इसी का नतीजा है कि जो मटर दिसंबर में 25 से 30 रुपए किलो मिलती थी, वह 100 रुपए किलो है।

14 हजार हेक्टेयर में इस विधि से किसानों ने की खेती

एचडीपीएस तकनीक ने 30 फीसदी तक बढ़ाई कपास की पैदावार

भोपाल। जागत गांव हमार

कपास उत्पादन बढ़ाने के लिए एचडीपीएस तकनीक से बोवनी करने के लिए किसानों को 2 सीजन से प्रेरित किया जा रहा है। इस तकनीक की मदद से कपास पैदावार में बढ़त दर्ज की गई है। केंद्र सरकार कपास किसानों की पैदावार बढ़ाने और लागत घटाने के लिए उच्च घनत्व वाली रोपाई विधि से खेती के लिए यह खास प्रोजेक्ट चला रही है। अध्ययन में खुलासा हुआ है कि इस प्रोजेक्ट की वजह से कपास के उत्पादन में बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है। यह प्रोजेक्ट कम उपजाऊ मिट्टी वाले इलाकों में लागू किया गया है। बीते कुछ वर्षों से कीटों के प्रकोप और बेमौसम बारिश की वजह से किसानों को कपास की खेती में भारी नुकसान उठाना पड़ा है। इसके चलते कपास बुवाई में किसानों की दिलचस्पी भी घटती देखी गई है। इस बार खरीफ सीजन में कपास की खेती 10 फीसदी कम क्षेत्रफल में की गई है। ऐसे में सरकार ने कपास उत्पादन बढ़ाने के इरादे से कम उपजाऊ और उथली मिट्टी वाले इलाकों में उच्च घनत्व वाली रोपाई प्रोजेक्ट लागू किया है और इसके जरिए किसानों की मदद की जा रही है।

उथली मिट्टी वाले इलाकों में उपज 34 फीसदी बढ़ी

केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी राज्यसभा में लिखित उत्तर में कहा कि जिन क्षेत्रों में उच्च घनत्व वाली रोपाई प्रणाली (एचडीपीएस) को उथली मिट्टी में अपनाया गया, वहां कपास की उपज में औसतन 30.4 फीसदी की बढ़ोतरी हुई और मध्यम मिट्टी में कम अंतराल वाली रोपाई (सीएस) में औसतन 39.15 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई है। भारत में कपास की अनुमानित उत्पादकता 443 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। यह चीन, ब्राजील और अमेरिका जैसे प्रमुख उत्पादक देशों की तुलना में कम है। इन देशों ने एचडीपीएस को अपनाया है।

8 राज्यों में एचडीपीएस लागू

मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों मेंकपास की पैदावार को बढ़ाने के लिए एचडीपीएस को बढ़ावा दिया जा रहा है और पिछले तीन वर्षों के दौरान चार कॉम्पैक्ट बीटी कपास किस्मों और एचडीपीएस के अनुकूल 19 बीटी कपास हाइब्रिड किस्मों को बोवनी के लिए किसानों को दिया गया है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) के तहत 8 राज्यों के 61 जिलों में एचडीपीएस लागू की गई थी।

10 हजार किसानों ने अपनाई तकनीक

उन्होंने कहा कि उथली मिट्टी में एचडीपीएस और मध्यम मिट्टी में सीएस को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी मोड में 2023-24 खरीफ सीजन के दौरान 10,418 किसानों को शामिल करते हुए 9,064 हेक्टेयर क्षेत्र में कपास की बोवनी की गई थी। उन्होंने बताया कि एचडीपीएस अपनाए गए खेतों में औसत उपज बढ़त 30.4 फीसदी थी और सीएस अपनाए गए खेतों में औसत उपज बढ़त 39.15 फीसदी थी। राज्य कृषि मंत्री ने कहा कि इस विशेष प्रोजेक्ट को दूसरे वर्ष 2024-25 तक आठ राज्यों में 14,478 हेक्टेयर क्षेत्र में खेती के टारगेट के साथ बढ़ाया गया है। इसके अलावा कपास की बीमारियों में से एक कपास लीफ कर्ल वायरस के लिए अत्यधिक प्रतिरोधी 11 बीटी कपास हाइब्रिड भी जारी की गई है। ताकि उत्तरी क्षेत्र में किसानों के नुकसान को कम किया जा सके।

समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी 20 जनवरी तक

दो लाख 11 हजार किसानों से खरीदी 14 लाख मीट्रिक टन

भोपाल। जागत गांव हमार

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अभी तक दो लाख 11 हजार 780 किसानों से 14 लाख 9 हजार 493 मीट्रिक टन धान की खरीदी उपार्जन केन्द्रों में हो चुकी है। धान की खरीदी के लिए 1358 उपार्जन केन्द्र बनाए गए हैं। धान का उपार्जन 20 जनवरी 2025 तक किया जाएगा। धान कॉमन का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रूपये और धान ग्रेड-ए का 2320 रुपए है। धान की खरीदी जिला पन्ना में 36,875, दमोह 26,655, सागर 5110, शहडोल 73,311, अनूपपुर 30,512, उमरिया 40,488, रीवा 1 लाख 61 हजार 640, सतना 1 लाख 57 हजार 85, सिंगरौली 56,394, सीधी 40,959, मऊगंज 39,672, मैहर 51,501, सीहोर 8682, रायसेन 11, 409, विदिशा 518, नर्मदापुरम 54,276, बैतूल 15,243, हरदा 129, कटनी 1 लाख 47 हजार 850, बालाघाट 1 लाख 82 हजार 287, मंडला 77,746, नरसिंहपुर 32,145, सिवनी 58,286, जबलपुर 89,045, डिंडोरी 8720, छिंदवाड़ा 2597, भिण्ड 207, शिवपुरी 92, अलीराजपुर 46 और झाबुआ जिले में 13 मीट्रिक टन की जा चुकी है।

केंद्र सरकार ने नारियल की एमएसपी बढ़ाई, एकमुश्त 420 रुपए की हुई बढ़ोतरी

केंद्र सरकार ने नारियल की एमएसपी बढ़ाई, एकमुश्त 420 की हुई बढ़ोतरी

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने 2025 मौसम के लिए कोपरा (नारियल) के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को मंजूरी दे दी है। किसानों को लाभकारी मूल्य प्रदान करने के लिए सरकार ने 2018-19 के केंद्रीय बजट में घोषणा की थी कि सभी अनिवार्य फसलों का एमएसपी अखिल भारतीय भारित उत्पादन लागत के कम से कम 1.5 गुना स्तर पर तय किया जाएगा। 2024 सीजन के लिए मिलिंग खोपरा की उचित औसत गुणवत्ता के लिए एमएसपी 11,582 रुपए प्रति क्विंटल और बॉल कोपरा के लिए 12,100 रुपए प्रति क्विंटल तय किया गया है। मिलिंग कोपरा का उपयोग तेल निकालने के लिए किया जाता है, जबकि बॉल, खाद्य खोपरा को सूखे फल के रूप में खाया जाता है और धार्मिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है। केरल और तमिलनाडु मिलियन कोपरा के प्रमुख उत्पादक है, जबकि बॉल कोपरा का उत्पादन मुख्य रूप से कर्नाटक में होता है। 2025 मौसम में मिलिंग कोपरा के लिए एमएसपी में पिछले मौसम की तुलना में 420 रुपए प्रति क्विंटल और बॉल कोपरा के मूल्य में 100 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी हुई है। पिछले 10 वर्षों में सरकार ने मिलिंग खोपरा और बॉल कोपरा के लिए एमएसपी को 2014-15 में 5,250 रुपए प्रति क्विंटल और 5,500 रुपए प्रति क्विंटल से बढ़ाकर 2025 में 11,582 रुपए प्रति क्विंटल और 12,100 रुपए प्रति क्विंटल कर दिया जिसमें लगभग 121 प्रतिशत और 120 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

किसानों को मिलेगा प्रोत्साहन| उच्च एमएसपी न केवल नारियल उत्पादकों के लिए बेहतर लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करेगा, बल्कि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारियल उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए कोपरा उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित भी करेगा। इससे दक्षिण भारत के किसान अधिक मात्रा में कोपरा की खेती करके अपनी आय को दोगुनी करेंगे।

छिलके रहित नारियल की खरीद

भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ लिमिटेड (नैफेड) और राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता महासंघ (एनसीसीएफ) मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस) के तहत कोपरा और छिलके रहित नारियल की खरीद के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसियों (सीएनए) के रूप में कार्य करना जारी रखेंगे।

नारियल तेल के दाम में उछाल

आजकल नारियल किसानों में बहुत खुशी है। अर्से बाद नारियल तेल के दाम में बड़ी तेजी देखी जा रही है। नारियल तेल के दाम में उछाल की वजह से नारियल (कोपरा) के भाव भी मजबूत बने हुए हैं। इसका सीधा फायदा किसानों को हो रहा है। पिछले महीने के आंकड़ो के अनुसार नारियल तेल का भाव 200 रुपए किलो चल रहा था जो कि कमाई के लिहाज से अच्छा है। व्यापारियों का कहना है कि दिवाली के बाद से तेल के भाव में तेजी है।

एक लाख सोलर पम्प देकर किसानों को ऊर्जा उत्पादन में बनाया जाएगा आत्म-निर्भर

2030 तक अपनी जरूरत की आधी बिजली सौर ऊर्जा से प्राप्त करेगा मप्र

3520 करोड़ की 880 मेगावॉट की आगर-नीमच सौर परियोजनाओं का किया लोकार्पण

भोपाल। जागत गांव हमार

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सूर्य ऊर्जा का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। सौर ऊर्जा सबसे अच्छी ऊर्जा है। आने वाले वर्ष-2030 तक मध्यप्रदेश अपनी आवश्यकता की बिजली का आधा हिस्सा सौर ऊर्जा से प्राप्त करेगा। सौर ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में प्रदेश तेजी से आगे बढ़ रहा है। सरकार का प्रयास उद्योग, धंधे, कृषि के लिए सस्ती दर पर बिजली उपलब्ध करवाना है। आगर में बनने वाली सौर ऊर्जा रेल विभाग को दी जाएगी, जिससे सात राज्यों में रेलगाड़ियां संचालित होगी। मुख्यमंत्री ने आगर-मालवा जिले के सुसनेर में 3520 करोड़ की लागत से निर्मित 880 मेगावॉट आगर और नीमच सौर परियोजनाओं का लोकार्पण किया। इसमें आगर-मालवा जिले की लगभग 2200 करोड़ की लागत से निर्मित 550 मेगावॉट सौर परियोजना एवं नीमच जिले की 1320 करोड़ की लागत से निर्मित 330 मेगावॉट सौर परियोजना शामिल है। मुख्यमंत्री ने आगर-मालवा जिले में 49.81 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन भी किया।

किसान होंगे आर्थिक रूप से सशक्त-

मुख्यमंत्रीने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए संकल्पित है। किसानों को समृद्ध बनाने सम्मान निधि और कृषि सिंचाई विद्युत बिल पर 53 हजार रुपए की सब्सिडी दी जा रही है। किसानों को सिंचाई के लिये सौर ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में आत्म-निर्भर बनाया जाएगा इसके लिए 1 लाख सोलर पम्प दिये जाएंगे, जिससे किसान अपनी आवश्यकता की बिजली स्वयं उत्पादित कर सकेंगे। प्रदेश के प्रत्येक किसान के खेत तक पानी पहुंचाने का काम सरकार कर रही है। प्रदेश में सिंचाई का रकबा 50 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर एक करोड़ हेक्टेयर तक ले जाया जाएगा, मध्यप्रदेश फसल उत्पादन के क्षेत्र में हरियाणा-पंजाब को पीछे छोड़ेगा।

दूध खरीदी पर बोनस देंगे

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों की आय में वृद्धि करने के लिए खेती के साथ पशुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए दूध खरीदी पर बोनस देंगे, इसके लिए सरकार काम कर रही है। देश में दूध उत्पादन का लगभग 9 प्रतिशत आपूर्ति मध्यप्रदेश द्वारा की जाती है। अगले 5 साल में नेशनल डेयरी डेवलेपमेंट बोर्ड के माध्यम से 20 प्रतिशत आपूर्ति कर प्रदेश को देश में अग्रणी बनाना है। सरकार इसके लिए प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री ने आगर-मालवा जिले में उत्पादित दूध की गुणवत्ता की सराहना की।

जनकल्याण पर्व मनाया जा रहा

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार युवा, महिला, गरीब, एवं किसान के विकास और कल्याण के लिए कृत संकल्पित है। सभी वर्गों के कल्याण के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं चलाई गई। महिलाओं को लाड़ली बहना योजना के माध्यम से आत्म-निर्भर बनाया जा रहा है। प्रदेश में सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान और जनकल्याण पर्व मनाया जा रहा है। जनकल्याण पर्व में प्रतिदिन विकास कार्यों की सौगात दी जा रही है। जनकल्याण अभियान 26 जनवरी तक चलेगा, जिसमें अधिकारी घर-घर आकर शासन की योजनाओं का लाभ देंगे। योजनाओं का लाभ प्राप्त करने से वंचित पात्र हितग्राही अपना आवेदन देकर लाभ लें। मुख्यमंत्री ने सरकार द्वारा चलाए जा रहे, जन कल्याण अभियान में सभी को सहयोग करने का संकल्प भी दिलाया।

मालवांचल में खुशहाली आएगी

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 17 दिसम्बर को जयपुर में 20 वर्षों से लम्बित पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ो परियोजना का भूमि-पूजन किया। इस परियोजना से चंबल एवं मालवांचल में खुशहाली आएगी। 25 दिसम्बर को पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेई की 100वीं जयंती पर मध्यप्रदेश में नया इतिहास लिखा जाएगा। इस दिन प्रधानमंत्री मोदी केन-बेतवा लिंक परियोजना के रूप में प्रदेश को एक बड़ी सौगात देंगे। उन्होंने छतरपुर जिले में आयोजित इस भूमि-पूजन कार्य म में शामिल होने के लिए सभी को आमंत्रित किया।

रोजगार के अवसर में बढ़ोत्तरी

प्रदेश के समग्र विकास के लिए विभिन्न अंचलों में रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित किए गए हैं। उद्योगों के माध्यम से रोजगार के अवसर में बढ़ोत्तरी का प्रयास भी किया जा रहा है। आने वाले समय में आगर-मालवा जिले में बड़े-बड़े उद्योग धंधे स्थापित होंगे और युवाओं को रोजगार मिलेगा। प्रधानमंत्री मोदी झालावाड़-आगर-उज्जैन रेल लाईन की सौगात दी गई है, मां बगलामुखी धाम को रेल लाइन से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। आगर-मालवा जिले को लॉ कॉलेज की सौगात देकर उसका भूमि-पूजन भी किया गया। उन्होंने कहा कि आगर जिले के विकास में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

देशभर में क्लाइमेट चेंज के चलते दिखेगा असर

अगले 25 साल में 20 फीसदी घट जाएगी धान की पैदावार

भोपाल। जागत गांव हमार

जलवायु बदलावों का विपरीत असर कृषि पर देखा जा रहा है। अगले 25 साल में बारिश पर आधारित धान की पैदावार में 20 फीसदी तक गिरावट का अनुमान जताया गया है। जबकि, सिंचाई के जरिए होने वाली धान की पैदावार में करीब 4 फीसदी गिरावट की आशंका जताई गई है। यह चौंकाने वाले खुलासे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की स्टडी में सामने आए हैं। ऐसे में जलवायु अनुकूल धान किस्मों के विकास में संस्थान और वैज्ञानिक जुट गए हैं। केंद्र सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रमुख नेटवर्क प्रोजेक्ट 'जलवायु अनुकूल कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार' के जरिए से इंटीग्रेटेड सिमुलेशन मॉडलिंग स्टडी करके जलवायु परिवर्तन के प्रति विभिन्न धान उत्पादक क्षेत्रों की संवेदनशीलता का आकलन किया। अध्ययन से पता चला है कि अनुकूलन उपायों के अभाव में जलवायु परिवर्तन से 2050 में बारिश पर आधारित चावल पैदावार में 20 फीसदी और 2080 में 47 फीसदी की कमी आने की आशंका है। स्टडी में बताया गया कि सिंचाई पर आधारित चावल की पैदावार 2050 में 3.5 फीसदी और 2080 में 5 फीसदी कम हो सकती है।

धान की 668 किस्में विकसित

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अनुसार जलवायु बदलावों के चलते धान की फसलों पर पड़ने वाले विपरीत असर से निपटने के लिए धान की किस्में विकसित कर ली गई हैं। जो अलग-अलग मौसम बदलावों, मिट्टी, पानी बदलावों को झेल सकती हैं। जबकि, धान की कुछ किस्मों पर काम भी चल रहा है। कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने लोकसभा में लिखित उत्तर में कहा है कि 2014 से 2024 तक चावल (धान) की कुल 668 किस्में विकसित की गई हैं, जिनमें से 199 किस्में अत्यधिक जलवायु प्रतिरोधी हैं, जो मुश्किल मौसम की स्थिति का सामना कर सकती हैं।

जलवायु बदलाव झेल सकती हैं ये धान किस्में

जलवायु अनुकूल 668 धान किस्मों में 103 धान किस्में ऐसी हैं जो सूखे और जल प्रभावों को झेलने में सक्षम हैं। जबकि, 50 धान की किस्में बाढ़, गहरे पानी, पानी डूबने के प्रति सहनशील हैं। इसके अलावा 34 चावल की किस्में नमकीन पानी और कटाव को झेलने में सक्षम हैं। 6 धान किस्में गर्मी के प्रति सहनशील हैं और 6 किस्में ठंड को झेल सकती हैं। इसके अलावा विकसित चावल की 668 किस्मों में से 579 किस्में कीटों और बीमारियों के प्रति सहनशील हैं।

151 संवेदनशील जिलों में आंकलन

आईसीएआर ने एनआईसीआरए के जरिए जलवायु अनुकूल अध्ययन के लिए 151 संवेदनशील जिलों के 448 जलवायु अनुकूल गांवों को शामिल किया गया है। देश में जलवायु बदलावों के विपरीत असर का सामना करने के लिए भारत सरकार राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (एनएमएसए) चला रही है। भारत सरकार जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए एनएमएसए के माध्यम से राज्यों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

तकनीकी का लाभ लेकर स्वावलंबी बनें किसान

भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी मंत्री लखन पटेल ने कहा है कि किसान नवीन तकनीकों का लाभ लेकर स्वाबलंबी बनें। नवीन तकनीकी एवं योजनाओं का उद्देश्य किसानों को रोजगार दिलाने एवं आत्मनिर्भर बनाने पर केंद्रित होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिन किसानों ने अपनी कृषि और आजीविका में सुधार किए हैं, उनकी कहानी प्रकाश में आना चाहिए। मंत्री पटेल केंद्रीय कृषि अभियान अभियांत्रिकी संस्थान भोपाल में आयोजित विशाल कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं अभियांत्रिकी मेले को संबोधित कर रहे थे। जिले की भोज आत्मा समिति एवं राइजिंग मध्य प्रदेश के सहयोग से आयोजित इस मेले में देश भर की लगभग 100 से अधिक कंपनियों ने कृषि यंत्रों एवं तकनीक का सजीव प्रदर्शन किया। इस अवसर पर आयोजित कृषि संगोष्ठी में प्रमुख रूप से डॉ. एसएस सिंधु, वैज्ञानिक आईएआरआई नई दिल्ली, डॉ. वाईसी गुप्ता, डॉ. पीबी भदोरिया आईआईटी खड़गपुर,प्रोफेसर डॉ. सी के गुप्ता सोलन, हिमाचल प्रदेश, डॉ. सी आर मेहता निदेशक कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, डॉ. सुरेश कौशिक आईएआरआई नई दिल्ली, डॉ. प्रकाश नेपाल आदि वैज्ञानिकों ने भाग लेकर विभिन्न विषयों पर किसानों को उपयोगी जानकारी दी। किसानो की समस्याओं और जिज्ञासाओं का स्थल निराकरण भी किया था। आयोजन के विस्तृत रूप रेखा भरत बालियान ने प्रस्तुत की।

शीत ऋतु में पशुओं की देखभाल: असावधानी बन सकती है हानि का कारण

» डॉ. राजकिशोर शर्मा
» डॉ. पंकज कुमार
» डॉ. कौशल कुमार
- सह प्राध्यापक, परजीवी विज्ञान विभाग
- प्राध्यापक, परजीवी विज्ञान विभाग
- सह प्राध्यापक, पशु व्याधि रोग विज्ञान विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय पटना, बिहार

शीत ऋतु पशुपालकों के लिए काफी संवेदनशील होती है। वातावरण के तापमान में आए परिवर्तन पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, इसमें थोडी सी असावधानी कभी-कभी बडी हानि का कारण बन जाता है। शीत ऋतु में पशु निम्न बीमारियों के प्रति संवेदनशील होते हैं।

सर्दी खाँसी: वातावरण में होने वाले अचानक परिवर्तन के प्रति पशु भी बहुत संवेदनशील होते है। अत्यधिक ठंढ के कारण भी नाक की श्लैष्मिक झिल्ली में सूजन हो जाती है एवं धीरे धीरे इस रोग से पूरी श्वास नली प्रभावित होती है जिससे खाँसी होती है और नाक से उजला हरा या पीला स्राव बहने लगता है।

कारण: अत्यधिक ठंढ सर्द हवा धूल कण धुआँ आदि कई बार परजीवी विषाणु, विषाणु या फफूंदी भी इस बीमारी के मूल्य कारण होते है।

लक्षण: प्रारंभ में नाक से पानी आता है एवं उपचार शुरू नहीं करने की स्थिती में बाद में गाढा उजला हरा पीला पिव निकलने लगता है जैसे जैसे बिमारी बढती है आँख की झिल्ली लाल एवं आँख से पानी गिरने लगता है। बार बार छींक आता है पशु अपने सिर को हिलाते है और थूथन तथा नाक को जमीन पर रगडते है नाक का रास्ता बंद हो जाने से श्वास लेने में कष्ट होता है तथा लगातार सडर सडर की आवाज आने लगती है।

उपचार: सर्वप्रथम नाक का रास्ता खोलने के लिए नथुने के स्राव को सैलाइज से साफ करना चाहिए। सुघने वाली दवा जैसे तात्पीन का तेल युकेलिप्टस तेल या टिंचर बेंजोइन कोई एक 30 मिली एक बाल्टी उबलते पानी में डालकर वाष्प सुघांना लाभप्रद होता है।

पशु चिकित्सक से परामर्श लेकर नोजल ड्राप ओलिवाइन की 2-3 बूंद नाक में सुबह शाम डालना चाहिए।

बडे पशुओं को कैफलोन या कैटकफ 25-30 ग्राम की मात्रा में दिन में 2-3 बार गलफड़े में मल दे चटनी रूप में इसे पानी में मिलाकर कभी नडी मिलाना चाहिए इसके अलावे मुलेठी चूर्ण 20 ग्रम गुड में मिलाकर चटाना चाहिए या कपूर 3 ग्रम पोटाष आयोडाइड 4 ग्राम या कपूर 3 ग्राम।

बुखार आ जाने पर बडे पशुओं पैसाजिला मोल या बोलीन या पैरासिटोल 25-30 ग्राम या छोटे पशुओं जैसे बकरी को 5-15 मिली0 मॉस में दिन में दो बार सुई के रूप में देना चाहिए। सलफा बोलम बडे पशुओं 4-6 बोतल छोटे पशु में 1-2 बोतल प्रतिदिन देना आवष्यक है।

जटिल सर्दी जुकाम: यह पशुओं में होने वाला छूतदार

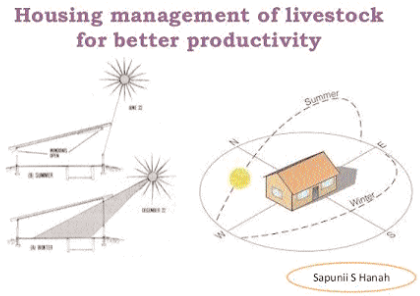

बीमारी है। जो वायरस के संक्रमण से फैलती है।

लक्षण: इस रोग में शरीर का तापक्रम अचानक बढ़ जाता है। खास प्रणाली में कफ संचय हो जाता है। इसके कारण कभी कभी आँखे लाल हो जाती है।आँखों सक कीचड आने लगता है एवं पलकों पर सुजन हो जाता है। श्वास नाली में कफ आ जाने से साँस लेने में कष्ट होता है। नाड से पिवयुक्त बलगम निकलने लगता है।

उपचार: चिकित्सा लक्षण के अनुसार पशुचिकित्सक के परामर्श पर कराना चाहिए। एण्टी बायोटिक को सुई देना आवश्यक है। सल्फा ड्रस का बोलास देना चाहिए।

पाला मारना: यह बीमारी अत्याधिक ठंढ पडने पर खुले में रहने वाले पशुओं के पैर आदि में होता है। पालतु पशु कभी कभी शीत से प्रभावित हो जाते है।

उपचार: पाला मारे हुए स्थान को गर्म एण्टीसेप्टिक से धोना चाहिए।

न्युमोनिया: यह फेफड़े में होने वाला कष्टदायक बीमारी है। शीत ऋतु में सर्द या ठंड हवा लगने से होती है। इसमें श्वास नली में कफ खाँसी साँस लेने में कठिनाई, बुखार हो जाता है या नाक में पीव युक्त गाढा स्त्राव निकलता है। पषु जुगाली करना बंद कर देता है। एवं उसे भुख नहीं लगती है।

नाक में पीव युक्त गाढा स्त्राव

उपचार: पशुओं में इस बीमारी के प्रारंभिक लक्षण दिखने पर पशुओं के शुद्व साफ एवं हवादार स्थान पर बाँध देना चाहिए।

उसे गर्म रखने के लिए कम्बल टाट या कपडा ओढा कर रखना चाहिए।

पशुओं को नाल से पिलाने वाली दवा नहीं देनी चाहिए बल्कि दवा चटनी अथवा इन्जेक्षन के रूप में देना चाहिए।

पशु के सीने पर तारपीन के तेल की मालिष करके गरम सेंक करना लाभप्रद है या छाती पर डनेजंतक च्सेंजमत लगाना चाहिए। दिने में दो तीन बार रोगी को तारपीन या युकेलिप्टस तेल या टिंचर बेंजोइन का शप देना चाहिए। यह बंद कमरे में सिर पर कपडा ओढा देना चाहिए। पशुओं के ताजा एवं साफ पानी मैगसल्फ मिलाकर दिया जाना चाहिए। पशुओं को आराम देने वाली सुविधाएँ उपलब्ध कराना चाहिए।

एलर्जी की स्थिती में एविल बेनीसोल या वेटलॉग का प्रयोग एण्टीबायोटिक के साथ करना चाहिए। गर्भावस्था में इन दवाओं को ना देना चाहिए।

बुखार कम करने के लिए पैरासिटामोल सुई या टेबलेट के रूप में देना चाहिए। खाँसी आने पर कैफलोन या कैटकफ का प्रयोग दिन में कई बार चटाने के रूप में देना चाहिए या शुद्व कुचला चूर्ण 5 ग्राम मुलेठी 10 ग्राम नौसादर 15 ग्राम एयन कार्व 8 ग्रम गुड के साथ आवश्यकतानुसार चटनी के रूप में सुबह शाम चटाना चाहिए।

सर्दी के मौसम में मछलियों की देखभाल, मत्स्यपालकों के लिए जरूरी टिप्स

» डॉ. सतेंद्र कुमार, प्रमुख वैज्ञानिक
- वैज्ञानिक (मत्स्य पालन)
केवीके, टीकमगढ़, मप्र
» डॉ. डॉ. बीएस किरार
- प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख
केवीके, टीकमगढ़, मप्र

मछली एक शीत रक्त जलीय जीव है, इसलिए सर्दियों के दौरान इनकी विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है और सर्दी का मौसम मछलियों के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। तापमान में गिरावट, ऑक्सीजन का स्तर कम होना और अन्य कारक मछलियों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मत्स्य पालकों को इस मौसम में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

सर्दियों में पानी का तापमान कम हो जाता है। मछलियों की प्रजाति के अनुसार उपयुक्त तापमान बनाए रखने का प्रयास करें। उथले तालाब में, पूरा पानी ठंडा हो जाता है, जो मछलियों के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और घातक साबित हो सकता है।

प्राय: सदिज्यों में सतही जल का तापमान निचली परतों से ठंडा होता है, इसलिए मछलियाँ निचले तल में रहना पसंद करती हैं। किसानों को तालाब में पानी की गहराई कम से कम 6 फीट तक रखनी चाहिए, ताकि उन्हें गर्म निचले क्षेत्र में हाइबरनेटिंग के लिए पयाज्ञ जगह मिल सके।

यदि तापमान बहुत कम हो जाए तो नल कूप (बोरवेल) द्वारा समय-समय पर (प्राय: यूर्योदय के पूर्व या देर रात) आंशिक रुप से गर्म पानी का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन ध्यान रखें कि तापमान में अचानक बदलाव न आए।

ऑक्सीजन का स्तर: सर्दियों में पानी में ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है जो मछली के विकास को प्रभावित करता है और गंभीर स्थिति में मृत्यु का कारण भी बन सकता है। सर्दियों के दौरान दिन की लंबाई और प्रकाश की तीव्रता भी कम हो जाती है, प्रकाश संश्लेषण गतिविधि कम होने के कारण तालाबों में ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है इसलिए तालाब के पानी को वातन (एरिएशन) और समय-समय पर आंशिक रुप से पानी बदने की सलाह दी जाती है। लगातार बादल छाए रहने के दौरान स्थिति और भी खराब हो सकती है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने तालाबों में खासकर सुबह के समय ताज़ा पानी डालकर या एरेटर का उपयोग करके ऑक्सीजन का स्तर बनाए रखें और मछलियों को आहार देना बंद कर दें। तालाब में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा कम होने पर ऑक्सीजन बढ़ाने वाला टेबलेट का छिड़काव 400 ग्राम / एकड़ की दर से करें या शाम एवं सुबह में 2 घंटा एयरेटर चलाएँ। तालाब में पानी की सतह को बर्फ से ढकने से रोकें।

आहार प्रबंधन: सर्दियों में मछलियां कम खाती हैं। इसलिए, उन्हें यूर्योदय पश्चात आहार दें और आहार की मात्रा आवश्यकतानुसार कम कर सकते हैं। मौसम का तापमान 20 डिग्री सेल्सियस से कम एवं 36 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा होने पर पूरक आहार का प्रयोग आधा कर देना चाहिए। तापमान में कमी के साथ मछलियों का आहार कम हो जाता है क्योंकि उनका पाचन तंत्र सुस्त हो जाता है। इसलिए, तापमान के आधार पर आहार की दर को 50-75त्र तक कम करना आवश्यक है। यदि तापमान 50 डिग्री से नीचे चला जाए, तो आहार देना बंद कर देना चाहिए। अतिरिक्त आहार बिना खाए रह जाता है और तालाब के तल में जमा हो जाता है, जिससे पानी की गुणवत्ता खराब हो जाती है। किसानों को कम प्रोटीन वाले आहार का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। सर्दियों के दौरान खराब माइक्रोबियल गतिविधि के कारण जैविक खादों के अपघटन की दर कम हो जाती है, इसलिए तालाब में गाय का गोबर, मुर्गी का गोबर और सुअर का गोबर जैसी जैविक खाद डालना कम करना / बंद करना भी उचित होगा। तालाब के तल पर जहरीली गैसों के किसी भी संदिग्ध संचय को रोकने के लिए समय-समय पर नीचे की मिट्टी (कांटेदार तार की मदद से) को रेक करने की भी सलाह दी जाती है। उच्च गुणवत्ता वाला भोजन प्रदान करें ताकि उनकी प्रतिरोधक क्षमता मजबूत रहे।

बीमारियों से बचाव: सर्दियों में मछलियां बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। पानी की गुणवत्ता की जांच करें। संक्रमण के लक्षणों पर ध्यान दें। ठंड के दौरान, मछलियों में कई तरह की फफूंद, जीवाणु और परजीवी बीमारियाँ जैसे फिन रोट, गिल रोट, ईयूएस और अगुलज़ेसिस दिखाई दे सकती हैं। सर्दियों की शुरुआत से ठीक पहले तालाब को 400 मिली/एकड़ की दर से सीआईपैक्स से उपचारित करें। इसके अलावा तालाब को 1-2 किग्रा./एकड़ की दर से पोटेशियम परमैंगनेट या 50-100 किग्रा./एकड़ की दर से चूना पत्थर से उपचारित करें। 100 किग्रा./एकड़ की दर से नमक का प्रयोग भी सर्दियों में बीमारी से मछलियों को बचाने में मदद करता है।

मछली को संक्रमण से बचाने प्रति 15 दिन पर पीएच मान के अनुसार 10-15 किग्रा. प्रति एकड़ की दर से चूना घोल कर छिड़काव करें एवं माह में एक बार प्रति एकड़ की दर से 400 ग्राम पोटाशियम परमेग्नेट को पानी में घोल कर छिड़काव करें।

मछली को परजीवी जनित संक्रमण से बचाने हेतु फसल चक्र में दो बार (दो माह पर) 40 किग्रा. प्रति एकड़ की दर से नमक को पानी में घोल कर छिड़काव करें एवं माह में एक सप्ताह प्रति किग्रा. पूरक आहार में 10 ग्राम नमक मिलाकर मछलियों को खिलायें। पंगेशियस मछली के तालाब में दो माह पर 20 किग्रा. प्रति एकड़ की दर से नमक का छिड़काव करें। बीमारी के संकेत दिखने पर तुरंत विशेषज्ञ से संपर्क करें।

तालाब की सफाई: तालाब को नियमित रूप से साफ रखें। मृत पत्तियों, शैवाल और अन्य मलबे को हटा दें। तालाब का पानी अत्याधिक हरा हो जाने पर रासायनिक उर्वरक एवं चूना का प्रयोग एक माह तक बन्द कर देना चाहिए, इसके बाद भी यदि हरापन नियंत्रित नहीं हो तो दोपहर के समय 800 ग्राम कॉपर सल्फेट या 250 ग्राम एट्राजीन (50 प्रतिशत) प्रति एकड़ की दर से 100 लीटर पानी में घोल कर तालाब में छिड़काव करना चाहिए।

तनाव कम करें: मछलियों को तनाव से बचाएं। अचानक पानी बदलने या तापमान में अचानक बदलाव करने से बचें।

निष्कर्ष : सर्दी के मौसम में मछलियों की देखभाल करना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल मछलियों के स्वास्थ्य को बचाता है बल्कि मछलियों की वृद्धि दर, उत्तर जीविता एवम उत्पादन को भी प्रभावित करता है। अलग-अलग मछली की प्रजातियों की सर्दी के प्रति सहनशीलता अलग-अलग होती है। तालाब का आकार और गहराई भी मछलियों के लिए महत्वपूर्ण होती है। स्थानीय जलवायु के आधार पर मछलियों की देखभाल की रणनीति में बदलाव करने की आवश्यकता हो सकती है।

मप्र को प्रकृति से मिला है सभी राज्यों से अधिक वन सम्पदा का वरदान

» केके जोशी

मप्र का वन क्षेत्र देश में सबसे अधिक विस्तृत है। यहां वनों को प्रकृति ने अकूत सम्पदा का वरदान से समृद्ध किया है। प्रदेश में 30.72 प्रतिशत वन क्षेत्र है जो देश के कुल वन क्षेत्र का 12.30 प्रतिशत है। यहां कुल वन क्षेत्र 94 हजार 689 वगज़ किलोमीटर (94 लाख 68 हजार 900 हेक्टेयर) है। वन क्षेत्रों का वैज्ञानिक प्रबंधन और वन संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन क्षेत्रीय स्तर पर 16 वृत्त, 64 वन मण्डल, 135 उप वन मण्डल, 473 परिक्षेत्र, 871 उप वन परिक्षेत्र और 8 हजार 286 परिसर कार्यरत हैं। प्रदेश में 24 अभयारण्य, 11 नेशनल पार्क और 8 टाइगर रिजर्व हैं, जिसमें कान्हा, पेंच, बाँधवगढ़, पन्ना, सतपुड़ा और संजय डुबरी टाइगर रिजर्व बाघों के संरक्षण में मील का पत्थर साबित हुए हैं। मप्र वन्य-जीव संरक्षण अधिनियम लागू करने वाला सबसे देश का पहला राज्य है। प्रदेश में वर्ष 1973 में वन्य-जीव संरक्षण अधिनियम लागू किया गया था। प्रदेश के सतपुड़ा टाइगर रिजर्व को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल की संभावित सूची में शामिल किया गया है। प्रदेश में सफेद बाघों के संरक्षण के लिये मुकुंदपुर में महाराजा मार्तण्ड सिंह जू देव व्हाइट टाइगर सफारी की स्थापना की गई है, इसे विश्वस्तरीय बनाये जाने के प्रयास जारी हैं। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व बाघ सहित कई वन्य-जीवों की आदर्श आश्रय स्थली और प्रजनन के सर्वाधिक अनुकूल स्थान है। पेंच टाइगर रिजर्व की 'कॉलर वाली बाघिन' के नाम से प्रसिद्ध बाघिन को सर्वाधिक 8 प्रसवों में 29 शावकों को जन्म देने के अनूठे विश्व-कीर्तिमान के कारण 'सुपर-मॉम' के नाम से भी जाना जाता है। विशेष रूप से कान्हा टाइगर रिजर्व में पाए जाने वाले हार्ड ग्राउण्ड बारहसिंगा को मध्यप्रदेश के राजकीय पशु का दर्जा मिला हुआ है।

देश में 13 हजार से भी अधिक तेंदुए हैं, जिसमें से 25 प्रतिशत तेंदुए मप्र में हैं। प्रदेश में तेंदुओं की संख्या 3300 से अधिक है। देश में तेंदुओं की आबादी में 60 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि मप्र में यह वृद्धि 80 प्रतिशत है। घड़ियाल, गिद्धों, भेड़ियों, तेंदुओं और भालुओं की संख्या में भी मप्र देश में अग्रणी है। मप्र बाघों का घर होने के साथ ही तेंदुओं, चीतों, गिद्धों और घड़ियालों का भी आँगन है। हाल ही में नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी ने मप्र से छत्तीसगढ़, राजस्थान और उड़ीसा में कुछ बाघों के स्थानांतरण को मंजूरी दे दी है। इस तरह मध्यप्रदेश अन्य राज्यों की जैव-विविधता को सम्पन्न बनाने में भी अपना योगदान दे रहा है।

लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग में अधिकारी हैं।

किसान दिवस मनाने का उद्देश्य चौधरी चरण सिंह के योगदान को सम्मानित करना है

कृषि विज्ञान केन्द्र शिवपुरी पर मनाया राष्ट्रीय किसान दिवस

शिवपुरी। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र, शिवपुरी पर देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह के जन्मदिवस के अवसर पर राष्ट्रीय किसान दिवस मनाया गया। 23 दिसम्बर को किसान दिवस मनाने का उद्देश्य चौधरी चरण सिंह के योगदान को सम्मानित करना है जो भारतीय किसानों की भलाई और उत्थान के लिए समर्पित थे।

इस उपलक्ष्य में कृषि विज्ञान केन्द्र पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई, स्वच्छता अभियान भी चलाया गया एवं केन्द्र में नवीन ड्रेगनफ्रूट इकाई में भी कार्य किया गया।

वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

वाद-विवाद प्रतियोगिता में राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय-कृषि महाविद्यालय ग्वालियर से आये रावे कृषि छात्रों एवं शिवपुरी जिले के कृषकों ने भाग लिया। रावे छात्र राजप्रताप सिंह भदौरिया ने चैधरी चरण सिंह के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए अपने विचार रखे एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिन्हें कृषि विज्ञान केन्द्र शिवपुरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के समस्त शासकीय सेवक भी उपस्थित रहे।

आवेदन करने की अंतिम तिथि 26 दिसंबर

50 प्रतिशत की छूट पर मप्र सरकार किसानों को देगी चॉफ कटर सहित अन्य कृषि यंत्र

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में किसानों को चॉफ कटर (ट्रेक्टर/ विद्युत चलित), मिनी दाल मिल (100 किग्रा प्रति घंटा से कम क्षमता) एवं मिलेट मिल (100 किग्रा प्रति घंटा से कम क्षमता) की कृषि मशीनें सब्सिडी पर उपलब्ध कराने के लिए लक्ष्य जारी किए गए हैं। जारी लक्ष्यों के विरुद्ध राज्य के इच्छुक किसान 26 दिसंबर 2024 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। किसानों के द्वारा किए गए आवेदनों के आधार पर 27 दिसंबर 2024 के दिन लॉटरी निकाली जाएगी। जिसके बाद चयनित किसान अनुदान पर दिये गये कृषि यंत्र खरीद सकते हैं।

कृषि यंत्रों पर कितना अनुदान मिलेगा- मध्य प्रदेश में किसानों को सब्सिडी पर कृषि यंत्र उपलब्ध कराने के लिए सरकार की ओर से कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। जिसमें महिला तथा पुरुष वर्ग, जाति वर्ग एवं जोत श्रेणी के अनुसार किसानों को अलग-अलग सब्सिडी दिये जाने का प्रावधान है। इसमें किसानों को 40 से 50 प्रतिशत तक की सब्सिडी दी जाती है।

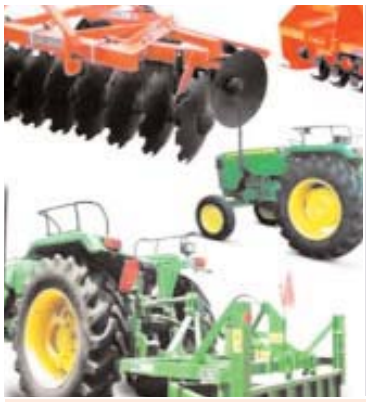

किसानों को बनवाना होगा डिमांड ड्राफ्ट

योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को स्वयं के बैंक खाते से धरोहर राशि का डिमांड ड्राफ्ट सम्बंधित जिले के सहायक कृषि यंत्री के नाम से बनवाकर ऑनलाइन आवेदन करना होगा। इसमें किसानों को चॉफ कटर (ट्रेक्टर/ विद्युत चलित), मिनी दाल मिल (100 कि.ग्रा प्रति घंटा से कम क्षमता) एवं मिलेट मिल (100 किग्रा प्रति घंटा से कम क्षमता) के कृषि यंत्रों के लिए 5000/- रुपए का डिमांड ड्राफ्ट बनाकर ऑनलाइन जमा करना होगा। योजना के तहत किसानों का चयन नहीं होने पर डिमांड ड्राफ्ट की राशि वापस कर दी जाएगी। धरोहर राशि के बिना आवेदन मान्य नहीं किया जाएगा।

आवेदन के लिए आवश्यक दस्तावेज- आधार कार्ड, मोबाइल नंबर, बैंक पासबुक की छाया प्रति, डिमांड ड्राफ्ट, खसरा/खतौनी, बी 1 की नकल आदि।

आवेदन कहां करें मध्यप्रदेश में किसानों को सभी प्रकार के कृषि यंत्रों को अनुदान पर लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन करना होता है। ऐसे में जो किसान ऊपर दिए गए कृषि यंत्रों पर अनुदान प्राप्त करना चाहते हैं वे किसान ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। जो किसान पहले से पोर्टल पर पंजीकृत है वे आधार ओटीपी के माध्यम से लॉगिन कर आवेदन प्रस्तुत कर सकते है। वहीं वे किसान जिन्होंने ने अभी तक पोर्टल पर अपना पंजीकरण नहीं किया है उन किसानों को एमपी ऑनलाइन या सीएससी सेंटर पर जाकर बायोमैट्रिक आधार अथेन्टिकेशन के माध्यम से अपना पंजीकरण कराना होगा और इसके बाद किसान कृषि यंत्र के लिए आवेदन कर सकते हैं। योजना से जुड़ी अधिक जानकारी के लिए किसान अपने ब्लॉक या जिले के कृषि कार्यालय में संपर्क करें।

छिंदवाड़ा जिले में अब ओला उबर की तर्ज पर होगी खेती

छिंदवाड़ा। कृषि विभाग, कृषि अभियांत्रिकी विभाग तथा जे-फार्म सर्विसेस द्वारा जिले के कस्टम हायरिंग केन्द्र संचालकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन जिला पंचायत सभाकक्ष में किया गया। इसमें ओला-उबर की तर्ज पर मोबाइल एप्लीकेशन जे-फार्म एप के माध्यम से स्लॉट बुक कर अपने खेत में कृषि उपकरणों को आसानी से उपलब्ध कराये जाने के संबंध में जानकारी दी गई।

इस प्रशिक्षण में जिले के सभी कस्टम हायरिंग केन्द्रों पर क्षेत्र के किसान स्लॉट बुक कर कृषि उपकरणों का सुगमता से उपयोग कर सकेंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जे-फार्म संस्था के प्रमुख शैलेश कुमार जैन एवं प्रदेश प्रमुख संजय कुमार द्वारा जे-फार्म एप पर पंजीयन करने की विधि एवं उसकी उपयोगिता के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। उप संचालक कृषि जतेन्द्र कुमार सिंह द्वारा बताया गया कि कृषि अभियांत्रिकी के क्षेत्र में हो रहे नवाचार एवं मोबाइल एप जे-फार्म के माध्यम से सुगमता से कृषि उपकरणों की उपलब्धता जिले के किसानों के लिए लाभप्रद होगी। कृषि अभियांत्रिकी विभाग से उपयंत्री अश्विनी सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में हो रहे डिजिटलाइजेशन के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि कृषि अभियांत्रिकी विभाग एवं जे-फार्म सर्विसेस के संयुक्त प्रयास से जिले के कृषक जिनके पास सभी आवश्यक कृषि उपकरण उपलब्ध नहीं है, वह मोबाइल एप्लीकेशन के माध्यम से ऑनलाइन कृषि उपकरण बुक कराकर यंत्रों का उपयोग अपने खेत में सुगमता से करा सकेंगे।

मंत्री ने दी 1153 ग्राम पंचायतों में भवन स्वीकृत

गांवों का समग्र विकास हमारी प्राथमिकता

भोपाल। जागत गांव हमार

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि गांव का समग्र विकास हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि सभी पंचायत भवन विहीन 1153 ग्राम पंचायतों में पंचायत भवन स्वीकृत किए गए हैं। मंत्री पटेल ने कहा कि पुराने जजर्र पंचायत भवनों के संबंध में निर्णय लेने के लिए एक विशेष समिति गठित की जाएगी। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि आगामी पंचायत चुनाव तक कोई भी ग्राम पंचायत भवन विहीन न रहे। मंत्री पटेल ने को प्रदेश भर से आए पंचायत प्रतिनिधियों से निवास पर मुलाकात की।

मंत्री पटेल ने कहा कि पंचायतों को स्वावलंबी बनाने के लिए प्राथमिकताओं को चिन्हित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पंचायत में शमशान घाट हो और साथ ही गौ-वंश संरक्षण के लिए विशेष उपाय किए जाए। मंत्री ने पौध-रोपण के दौरान सावधानी और सतर्कता बरतने और नियमित मॉनिटरिंग के लिए एक ठोस योजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी प्रतिनिधियों को ग्राम पंचायतों में कमशिज्यल कॉम्प्लेक्स बनाने के लिए सुझाव देने के लिए कहा।

जमीनों पर अतिक्रमण हटाने विशेष प्रयास करें

मंत्री पटेल ने कहा कि सभी पंचायत प्रतिनिधि सरकारी जमीनों पर अतिक्रमण हटाने के लिए विशेष प्रयास करें, इससे पंचायतों को भूमि को संरक्षित करने में मदद मिलेगी। उन्होंने ग्राम पंचायतों के कार्यक्षेत्र में रेत संबंधित समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर सुलझाने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि कपिलधारा और सामुदायिक पेयजल परियोजनाओं की लागत को बराबर करने की दिशा में विचार किया जा रहा है, जिससे ग्रामीणों को सुगमता से लाभ मिल सके। मंत्री पटेल ने कहा कि पंचायत सचिवों और जीआरएस के लिए एमआईएस पोर्टल को और अधिक सुलभ बनाया जाएगा। उन्होंने कार्य अनुमोदन में पारदर्शिता लाने पर बल दिया। मंत्री पटेल ने कहा कि पंचायतें मजबूत होंगी, तो प्रदेश सशक्त बनेगा। इस अवसर पर सरपंच संघ के प्रतिनिधियों ने विभिन्न मुद्दों को मंत्री पटेल के समक्ष रखा।

नवीनतम रिपोर्ट: किसानों की आय भले ही बढ़ रही हो, लेकिन खर्च आय से अधिक

भोपाल। जागत गांव हमार

संसद की कृषि, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण पर स्थायी समिति ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट में पाया है कि किसानों की आय भले ही बढ़ रही हो, लेकिन खर्च आय से अधिक है। इससे किसान परिवारों को अधिक उधार लेने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

नाबार्ड द्वारा 2022-23 के लिए ग्रामीण वित्तीय समावेश पर हाल ही में किए गए सर्वेक्षण में कहा गया था कि परिवारों की औसत मासिक आय में पांच साल की अवधि में 57.6 प्रतिशत की पर्याप्त वृद्धि देखी गई है। यह 2016-17 में 8,059 रुपए से बढ़कर 2021-22 में 12,698 रुपए हो गई। यह वृद्धि 57.6 प्रतिशत रही। लेकिन यहां ध्यान रखना होगा कि औसत मासिक व्यय और भी तेजी से बढ़ा। इसी अवधि में यह 6,646 से बढ़कर 11,262 रुपए (69.4 प्रतिशत की वृद्धि) हो गई। इससे असंतुलन पैदा हो गया। समिति का कहना है कि वर्तमान स्थिति में सावधानीपूर्वक निगरानी और लक्षित हस्तक्षेप की जरूरत है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसान अपनी कृषि गतिविधियों में निवेश जारी रखते

हुए अपनी उधारी का स्थाई रूप से प्रबंधन कर सकें और साथ ही विभाग को यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए कि किसान भारी कर्ज के दुष्चक्र में न फंस जाएं। इसके अलावा किसानों के कल्याण के लिए चलाई जा रही तमाम योजनाओं का भी जमीनी स्तर पर अधिकतर किसानों को लाभ पहुंच सके। संसदीय समिति ने अपनी सिफारिश में कृषि विभाग का नाम भी बदलने की बात कही है। अब तक विभाग का नाम कृषि और किसान कल्याण विभाग था, इसे बदलकर अब कृषि, किसान और खेत मजदूर कल्याण विभाग करने का सुझाव दिया गया है। समिति का कहना है कि इससे खेतिहर मजदूरों पर अधिक ध्यान केंद्रित हो सकेगा।

पाले के प्रभाव से बचाव के लिए कृषि विज्ञान केंद्र ने जारी की एडवायजरी

पाले से सर्दी के मौसम में टमाटर, मिर्च, बैंगन-पपीता, अलसी सरसों, धनिया, अरहर, गेहूं में 10 से 20 फीसदी तक नुकसान

नरसिंहपुर। जागत गांव हमार

किसान भाइयों जैसा आप लोग देख रहे हैं कि विगत सप्ताह से मौसम मे बदलाव है जिसके कारण तापमान में लगातार गिरावट हो रही है। बदली हुई परिस्थितियों का विपरीत प्रभाव फसलों के ऊपर देखने को मिल रहा है। मौसम में आए परिवर्तन एवं कोहरे से सबसे ज्यादा नुकसान दलहनी और सब्जियों की फसलों में होता है। कृषि विज्ञान केन्द्र नरसिंहपुर द्वारा मौसम में आए तेजी से बदलाव को देखते हुए एडवायजरी जारी की है। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. विशाल मेश्राम और साथी वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया कि शीतलहर एवं पाले से सर्दी के मौसम में सभी फसलों को थोड़ा नुकसान होता है। टमाटर, मिर्च, बैंगन आदि सब्जियों पपीता के पौधों एवं, अलसी, सरसों, धनिया, अरहर, गने एवं गेहूं तथा मटर, चना, मसूर, बटरी, में 10 से 20 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है। वैज्ञानिकों ने बताया कि पाला दरअसल दो तरह का होता है। पहला एडवेक्टिव और दूसरा रेडिएटिव अर्थात विकिरण आधारित। एडवेक्टिव पाला तब पड़ता है। जब ठंडी हवाएं चलती है। ऐसी हवा की परत एक-डेढ़ किलोमीटर तक हो सकती है। इस अवस्था में आसमान खुला हो या बादल हों, दोनों परिस्थितियों में एडवेक्टिव पाला पड़ सका है। जब बादल बिलकुल साफ हो और हवा शांत हो, तब रेडिएटिव प्रकार का पाला गिरता है। जिस रात पाला पड़ने की आंशका व्यक्त की जाती है। उस रात बादल पृथ्वी के कम्बल की तरह काम करते हैं जो जमीन से ऊपर उठने वाले संवहन ताप को रोक लेते हैं। ऐसे में बहती हवाएं इस रोकी गई हवा से मिल जुलकर तापमान एक समान कर देती हैं। शांत हवाएं विकिरण ऊष्मा को पृथ्वी से अंतरिक्ष में जाने से रोक देती है। ऐसे में हवा के नहीं चलने से एक इनवर्शन परत बन जाती है। इनवर्शन यानी एक ऐसी वायुमंडलीय दशा जो सामान्य दिनों की तुलना में उल्टी हो। सामान्य दशा में हवा का ताप ऊंचाई बढ़ने से घटता है।

पौधों मे ब्लाइट रोग का प्रभाव भी देखने को मिलता है...

पाले के प्रभाव से फल मर जाते है व फूल झड़ने लगते है। प्रभावित फसल का हरा रंग समाप्त हो जाता है। पत्तियों का रंग मिट्टी के रंग जैसा दिखता है। ऐसे में पौधों के पते सड़ने से बैक्टीरिया जनित बीमारियों का प्रकोप अधिक बढ़ जाता है। कभी-कभी शत प्रतिशत सब्जी की फसल नष्ट हो जाती है। फलदार पौधे पपीता, आम आदि में इसका प्रभाव अधिक पाया गया है। शीत ऋतु वाले पौधे 2 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान सहने में सक्षम होते है। इससे कम तापमान होने पर पौधे की बाहर व अंदर की कोशिकाओं में बर्फ जम जाती है। पाला पहाड़ के बीच के क्षेत्रों में अधिक पड़ता है। पाले के कारण अधिकतर पौधों के फूलों के गिरने से पैदावार में कमी हो जाती है। पत्ते टहनियां और तने के नाट होने से पौधों को अधिक बीमारियां लगती है। विगत 3 दिनों से मौसम मे बदलाव है जिसके कारण तापमान में लगातार गिरावट हो रही है बदली हुई परिस्थितियों का विपरीत प्रभाव फसलों के ऊपर देखने को मिल रहा है। मौसम में आए परिवर्त और कोहरे से सबसे ज्यादा नुकसान दलहनी और सब्जियों की फसलों में होता है, सब्जी फसलों मे जिनकी पत्तियॉ चोड़ी होती है उनमें ज्यादा नुकसान होता है जैसे आलू ,टमाटर ,गोभी, भिंडी, सरसो, मूली, दलहनी फसलों जैसे अरहर, चना, मसूर आदि मे ज्यादा नुकसान होगा। पौधों के पत्तियों के प्रभावित होने से उनको भोजन नहीं मिलने के कारण उनके उत्पादित दाने सिकुड़ जाते है या छोटे हो जाते हैं। और कभी-कभी गिरते तापमान के कारण पौधों मे ब्लाइट रोग का प्रभाव भी देखने को मिलता है। यदि रात का तापमान 7 0 से नीचे हो, बदरी हो तो आलू , टमाटर, मुली में आगेती झुलसा आता है। पाला व झुलसा से बचाने के लिए किसान भाइयों को सूचित किया जाता है कि वह फसलों में पानी दे, फसल की मेडो पर धुंआं शाम सात बजे के बाद करें। या थाओ यूरिया 250 ग्राम/ एकड की दर से छिड़काव करें। साथ ही सब्जिओं में बचाव के लिए मेंकोजेब /400.600 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें। छिड़काव करने से फंफूदनाशी पत्तियों पर परत बना लेती है जिससे तापमान बढ़ जाता है फसल सुरक्षित हो जाती हैं। और उसमें पाला लगने की संभावना काफी कम हो जाएगी। अगर यह नहीं कर सकते हैं तो आप धुआं जरूर करें धुआं करने से तापमान में वृद्धि होगी। दलहनी फसलों जैसें चना, मसुर, मटर में पानी नहीं दिए हैं तो हल्का पानी 3 घंटे की शिफ्ट में भी दे सकते हैं। पाले का ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ेगा। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा लगातार जिलें में भ्रमण किया जा रहा है भ्रमण के दौरान ग्राम मेरव, चिरचिटा करपगांव बोहानी मे पाया गया कि गेहूं मे जड़ सड़ने के साथ जड़ माहू हैं। जड़सड़न के रोकथाम के लिए कार्बनडाजिम, मेंकोजेब /400 ग्राम प्रति एकड़ या टेबोकोनोजोल . सल्फर /400 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर के साथ छिडकाव करें। जडमाहू नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत 100 मिली/एकड़ छिडकांव करें।

पशुओं का ठंड से बचाव करें

वैज्ञानिकों द्वारा सलाह देते हुए बताया कि ठंड से बचाव के लिए कृषक रात्रि के समय पशु घर एवं मुर्गीघर की खुली दीवारों को बोरे अथव तिरपाल से बंद करें। छोटे चूजों को ठंड से बचाव के लिए कमरे में तापमान बनाए स्यने के लिए बाच्च या हेलोजन का प्रयोग करें। ठंड से शरीर का रखने के लिए पशुओं को अधिक ऊर्जा की आवश्यकता की मात्रा 15-20 प्रतिशत तक बढ़ा सकते बना होती है जिसके लिए ये बा है पीने के लिए ताजे पानी की व्या करें। खुर वाले पशुओं में मुंहपका खुरपका का टीकाकरण कराएं। पहुओं में कृमि के रोकथाम के लिए एलबेन्डाजाल। बोलस प्रति पातु खिलाए एवं आइधर मेक्टिन 1 मिली प्रति 50 किलोधान पशु बजन की दर से चलों के बीचे लगाएं।

पाला से बचाव के है उपाय

- जिस रात पाला पड़ने की संभावना हो तो रात में फसल के आसपास, मेड़ों पर रात्रि में कूड़ा-कचरा या अन्य व्यर्थ पदाथज जैसे घास-फूस जलाकर धुआं करना चाहिए।
- पौधशाला के पौधों एवं क्षेत्र चाले उद्यानों नकदी सब्जी चाली फसलों को टाट, पॉलिथीन अथवा भूसे से ढक दें।
- खेत में सिंचाई करनी चाहिए। पर्याप्त नमी नहीं होने पर शीतलहर व पाले से नुकसान की संभावना कम रहती।
- जरूरत हो तो आलू व सरसों के खेत की सिंचाई कर दें है।
- दलहनी फसलों को पाले से बचाने के लिए बगल वाले खेत की सिंचाई कर दें।
- तिलहनी फसलों की सीधे सिंचाई करने से फसल गिर सकती है।

केन-बेतवा लिंक परियोजना से मध्यप्रदेश में 8.11 लाख हेक्टेयर भूमि की होगी सिंचाई

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के सभागार में 40 विभिन्न तहसीलों के कृषकों के बीच किया गया। जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. बीएस किरार के मार्गदर्शन में वैज्ञानिकों डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. एसके सिंह, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. सतेन्द्र कुमार, डॉ. एसके जाटव, डॉ. आईडी सिंह एवं जयपाल छिगारहा द्वारा किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा केन-बेतवा लिंक राष्ट्रीय परियोजना के बारे में किसानों को विस्तार से बताया गया कि यह देश में पहली परियोजना होगी जिसका शुभारंभ पीएम मोदी 25 दिसंबर को खजराहो में भूमिपूजन एवं शिलान्यास कर करेंगे। इस परियोजना के अंतर्गत दो नदियां केन और बेतवा को आपस में जोड़ा जाएगा। इससे उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के कई जिले लाभान्वित होंगे। केन-बेतवा लिंक राष्ट्रीय परियोजना से मध्य प्रदेश में कुल 8.11 लाख हे. भूमि की सिंचाई सुविधा प्रदान की जाएगी जिसमें मध्य प्रदेश में केन-बेसिन से 4.47 लाख हे. और बेतवा-बेसिन से 2.06 लाख हे. वही उत्तर प्रदेश में 2.27 लाख हे. भूमि को सिंचाई का पानी उपलब्ध हो सकेगा।

टीकमगढ़ वैज्ञानिकों ने किसानों को किया जागरूक

इस परियोजना से मध्य प्रदेश के 10 जिले लाभान्वित होगें जिसमें प्रथम चरण के जिले दमोह, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी और दूसरे चरण में दतिया, शिवपुरी, सागर, रायसेन और विदिशा जिले सम्मलित होंगे। टीकमगढ़ जिले में 130 गांव की 43400 हे. और निवाड़ी जिले में 164 गांव की 91018 हे. क्षेत्रफल के लिए सिंचाई का पानी उपलब्ध हो सकेगा। टीकमगढ़ अंतर्गत तहसील जैसे दिगोड़ा के 31 गांव एवं 9175 हे. क्षेत्र, जतारा के 30 गांव एवं 12250 हे. क्षेत्र, लिधौरा के 57 गांव एवं 18450 हे. क्षेत्र, पलेरा के 18 गांव एवं 3526 हे. क्षेत्र की सिंचाई की जा सकेगी। बुंदेलखंड क्षेत्र में सूखाग्रस्त एवं जल की कमी वाले क्षेत्रों में सिंचाई के लिए जल की पूर्ति करना है। केन नदी का उद्गम स्थल मध्य प्रदेश के कटनी जिला में है, यह यमुना की सहायक नदी है। बेतवा नदी का उदगम स्थल मध्य प्रदेश के रायसेन जिला में है, बेतवा नदी टीकमगढ़ जिले के ओरछा से होकर गुजरती है। इस योजना के अंतर्गत कई डेम एवं नहरों का निर्माण किया जाएगा और पन्ना से छतरपुर टीकमगढ़ होते हुए केन नदी से नहर द्वारा उत्तर प्रदेश के बरुआसागर के पास बेतवा नदी से जोड़ा जाएगा। इस परियोजना मुख्य उद्देश बुंदेलखंड क्षेत्र के सूखे की घटनाओं में कमी लाना, विद्युत उत्पादन, जैव विविधता का जीर्णोद्धार, किसानों की आर्थिक दशा में सुधार है और टीकमगढ़ जिला हरा भरा होगा। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा परियोजना के उपलक्ष में विभिन्न तहसीलों में आगामी आयोजित किसान सम्मलेन में कृषकों को वैज्ञानिक तकनीकों एवं परियोजना के महत्व को बताएंगे साथ ही केंद्र के अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीणों कृषक एवं विद्यार्थियों को इस परियोजना का महत्व एवं जागरूकता कार्यक्रम करते रहेंगे।

पशु चिकित्सा शिविर चारा फसल संगोष्ठी और प्राकृतिक खेती का हुआ प्रदर्शनी

शिवपुरी। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र शिवपुरी द्वारा जिले में पशुपालन एवं डेयरी विभाग के समन्वय में एक दिवसीय पशु चिकितसा शिविर चारा फसल संगोष्ठी सह प्राकृतिक खेती प्रोत्साहन प्रदर्शनी का आयोजन ग्राम रातौर में कृषि महाविद्यालय ग्वालियर से आये 18 रावे छात्रों की सहभागिता में ग्राम रातौर एवं आस-पास के अन्य ग्रामों के पशुपालकों, कृषकों एवं मुर्गा-मुर्गी पालकों के लिए 16 दिसम्बर को शिविर का आयोजन किया गया। चिकित्सा शिविर का उद्घाटन ग्राम रातौर के सरपंच रामकुमार धाकड़ द्वारा किया गया उन्होंने आयोजन को ग्रामीणों के लिए महत्वपूर्ण बतलाते हुए पशुपालकों को लाभ लेने एवं जागरूकता के लिए उपयोगी बतलाया। उप संचालक पशुपालन डॉ. बीपी यादव द्वारा पशु चिकित्सा शिविर द्वारा फसल संगोष्ठी एवं प्राकृतिक खेती प्रदर्शनी को रावे छात्रों के माध्यम से जिले के पशुपालकों, युवाओं के लिए बहुत उपयोगी और जरूरी बतलाया कि इस तरह के आयोजनों से हमें कृषि के समन्वय में पशुधन से खेती को लाभकारी और उपयोगी कम खचीलजे कम रासायनिक दवाओं के प्रयोग करने की जरूरत होगी।

टीकाकरण के बारे में प्रोत्साहित करते हुए पशुपालकों को प्रेरित किया गया

डॉ. नितिन गुप्ता, पशु चिकित्सक द्वारा भारत सरकार एवं मप्र शासन के लिए पशुपालकों के लिए योजनाओं के बारे में विस्तार से बतलाया और जिज्ञासाओं का भी समाधान किया गया। डॉ. गायत्री कश्यप पशुपालन अधिकारी विकासखण्ड शिवपरी सह पशु चिकित्सक द्वारा दुधारू पशुओं में नस्ल सुधार, कृत्रिम गभाधजन में ट्रिपल एस तकनीक से उन्नत नस्ल की बछड़ी होने के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. मुकेश गुप्ता पशु चिकित्सक द्वारा पशुओं में रोग एवं उनके नियंत्रण तथा संतुलित आहार व्यवस्था में संकर नेपियर घास के समावेश के बारे में समझाया। डॉ. सुनील धाकड़, पशु चिकित्सक एवं कैलाश बाथम एव्हीएफओ एवं उनकी टीम द्वारा पशुओं मैंसे, गाय, बकरी एवं मुर्गा-मुर्गियों को इलाज की दवाएं देते हुए उपचारित भी किया। टीकाकरण के बारे में प्रोत्साहित करते हुए पशुपालकों को प्रेरित किया गया। डॉ. एमके भार्गव वरिष्ठ वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) द्वारा पशुधन के लिए एक ही खेत में वर्ष भर हरा चारा उत्पादन के बारे में संकर बाजरा नेपियर घास और मौसमी हरे चारे के एवं उनकी उपयोगिता के बारे में विस्तार से चारा संगोष्ठी में बतलाया।

मध्यप्रदेश का एक छोटा-सा जिला बुरहानपुर अपनी ऐतिहासिक धरोहरों के साथ-साथ केले की खेती के लिए भी मशहूर है। बुरहानपुर के केले कई शहरों में सप्लाई होते हैं। जिले में बड़े पैमाने पर केले की खेती और उत्पादन के चलते इसे यहां का एक जिला-एक उत्पाद घोषित किया गया है। अब बुरहानपुर जिला एक जिला-एक उत्पाद पहल के तहत सफलता के नए आयाम गढ़ रहा है। इस पहल के तहत केले उगाने वाले किसानों की आय बढ़ा रही है और जिले में एक नई उद्यम क्रांति भी शुरू हो गई है।

आधुनिक खेती को आप एडवांस फार्मिंग कह सकते हैं जिसमें अच्छी तकनीक, अच्छे बीज और अच्छे खाद, कीटनाशकों का उपयोग करते हुए किसान बंपर मुनाफा कमाते हैं

कई राज्यों में बिक रहा बुरहानपुर के रितिश का बनाना पाउडर, शासन की मदद से शुरू की फैक्ट्री

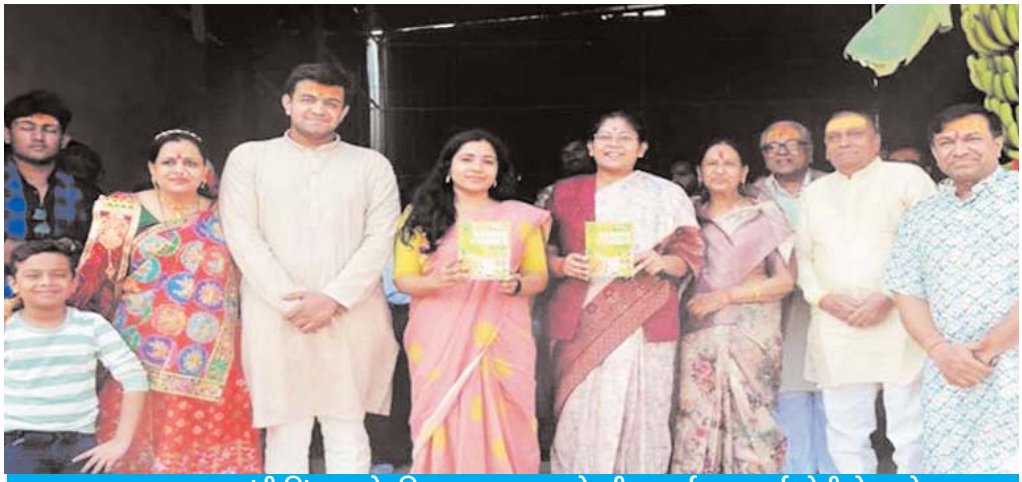

भोपाल। बुरहानपुर में इसी साल फरवरी में बनाना फेस्टिवल का आयोजन हुआ था। इसमें यहां के उद्यमी और केला किसान शामिल हुए। इनके बीच हुए संवाद का नतीजा अब जमीनी स्तर पर नजर आने लगा है। कई केला किसान भी अब न सिर्फ केले (फल) से, बल्कि केले के पेड़ का उपयोग कर इसके रेशे से भी उत्पाद बनाकर बाजार में बेच रहे हैं। ऐसी ही एक कहानी बुरहानपुर के उद्यमी रितिश अग्रवाल की उभरकर सामने आई है।

यूनिट में बन रहे तीन प्रकार के पाउडर- उन्होंने बनाना पाउडर बनाने की यूनिट शुरू की है। वे इस यूनिट को जिला प्रशासन और उद्यानिकी विभाग की मदद से खकनार के धाबा गांव में चला रहे हैं। वे बनानीफाय ब्रांड के नाम से पौष्टिक पाउडर बना रहे हैं, जो बच्चों और बड़ों सभी के लिए ऊर्जा और सेहत के लिहाज से फायदेमंद है। रितिश अपनी यूनिट में केले से तीन प्रकार के पाउडर बना रहे हैं। पहला पाउडर खाने योग्य है। इसे केले के गूदे से बनाया जाता है। यह शुद्ध और बेहद उच्च गुणवत्ता वाला है होता है। दूसरा पाउडर- सादा पाउडर है, जो केले के छिलके सहित प्रोसेस करके बनाया जाता है। यह भी खाने योग्य है और इसमें फाइबर प्रचुर मात्रा में मौजूद है। तीसरा पाउडर सिर्फ केले के छिलके से बनाया जाता है। इस पाउडर का इस्तेमाल खाद (मैन्योर) के लिए किया जाता है। यह सभी प्रकार की फसलों की गुणवत्ता और उत्पादन बढ़ाने में सक्षम बताया जाता है।

सरकार ने दी 10 लाख रुपये की सब्सिडी- इस यूनिट को लगाने में 75 लाख रुपए की पूंजी लगी है, जिसमें प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के तहत 10 लाख रुपए की सब्सिडी दी गई है। यूनिट में अहमदाबाद से लाई गई आधुनिक मशीनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इनसे उत्पादन प्रक्रिया तेज और आसान हुई है।

इन राज्यों में बिक रहा पाउडर- बनानीफाय ब्रांड के उत्पाद मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब, और दिल्ली जैसे राज्यों में भेजे जा रहे है। इसके 250 ग्राम पैक की कीमत 280 रुपए है और 500 ग्राम पैकेट की कीमत 480 रुपए हैं। यूनिट में केले के छिलकों को वेस्ट के रूप में न फेंककर छिलकों से पाउडर बनाकर नर्सरियों और उद्यानिकी फसलों में खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। नेपानगर की विधायक मंजू दादू और कलेक्टर बुरहानपुर भव्या मित्तल ने इस बनाना पाउडर यूनिट का शुभारंभ किया था। यह यूनिट अब न सिर्फ बुरहानपुर के किसानों और उद्यमियों के लिए प्रेरणा बन गई है। बल्कि एक जिला-एक उत्पाद योजना की वास्तविक सफलता का प्रतीक बन गई है।

15 लाख रुपए तक पहुंची छिंदवाड़ा के किसान शरद नागरे की कमाई, इस नई खेती से सुधरे हालात

नागरे की सक्सेस स्टोरी

अब किसान परंपरागत खेती में उतना ध्यान नहीं लगाते जितना पहले लगाते थे। इसकी वजह है आधुनिक खेती में होने वाला मुनाफा। इस मुनाफे को देखते हुए किसान परंपरागत खेती छोड़कर आधुनिक खेती की ओर रुख कर रहे हैं। इस आधुनिक खेती को आप एडवांस फार्मिंग कह सकते हैं जिसमें अच्छी तकनीक, अच्छे बीज और अच्छे खाद, कीटनाशकों का उपयोग करते हुए किसान बंपर मुनाफा कमाते हैं। आज ऐसे ही एक किसान शरद नागरे के बारे में बात करेंगे जिन्होंने एडवांस फार्मिंग में गजब की सफलता पाई है। शरद नागरे छिंदवाड़ा जिले के बिछुआ ब्लॉक के झामटा गांव के रहने वाले हैं। शुरू में वे पारंपरिक खेती करते थे और उसी से आय कमाते थे। इसमें वे सीमित संसाधनों और कम आमदनी को लेकर हमेशा जूझते रहते थे। यहां तक कि आजीविका कमाने के लिए भी संघर्ष की स्थिति थी। लेकिन शरद नागरे ने इससे हार नहीं मानी और एडवांस फार्मिंग पर फोकस किया। इसका नतीजा है कि वे आज आधुनिक कृषि तकनीकों की मदद से न केवल लखपति बन गए हैं, बल्कि अपने गांव के किसानों के लिए प्रेरणास्रोत भी बन चुके हैं। यहां तक कि उन्हें दूर-दूर के किसान भी अपना फार्मिंग आइकॉन मानने लगे हैं। इन किसानों को नागरे की कामयाबी ने बहुत प्रभावित किया है।

शरद नागरे शुरू में बहुत ही पुराने तरीकों से खेती करते थे। यहां तक कि प्लाऊ, हार्वेस्टर, ट्रैक्टर, आधुनिक यंत्र और नई-नई तकनीकों से वे हमेशा दूर ही रहे। इससे उन्हें बेहद कम आमदनी होती थी। हालांकि उनके अंदर कुछ नया करने की ललक जरूर थी। लिहाजा उन्होंने हॉर्टिकल्चर विभाग से खेती के बारे में जानने के लिए मदद ली। वहां से गाइडेंस मिलने के बाद उनकी स्थिति और सोच बदलने लगी। वे एडवांस फार्मिंग पर फोकस करने लगे। विभाग ने उन्हें टमाटर, बैंगन, लहसुन, खीरा और लौकी जैसी फसलों की खेती के फायदे बताए और आधुनिक कृषि तकनीकों की ट्रेनिंग भी दी। तकनीकी सलाह के बाद शरद नागरे ने 4 हेक्टेयर खेत में सब्जी फसलों की खेती शुरू की। शुरू में नई तकनीक अपनाने में कठिनाई हुई, लेकिन वे उसमें लगे रहे। इसमें उन्होंने नई सिंचाई तकनीक, उन्नत किस्म के बीज, खाद और मल्चिंग विधियों का प्रयोग किया। हॉर्टिकल्चर विभाग ने उन्हें मल्चिंग के लिए 16 हजार रुपये की सब्सिडी दी। इसी के साथ खेती में मेहनत और नई तकनीक का इस्तेमाल बढ़ाते हुए अच्छी सफलता मिलने लगी। उन्हें टमाटर, बैंगन और अन्य फसलों की अच्छी उपज मिलने लगी।

किसानों के लिए प्रेरणास्रोत

इन उत्पादों का बाजार में बढ़िया भाव भी मिलने लगा। मुनाफा बढ़ने से परिवार की आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगी। नागरे की सालाना आमदनी 10 लाख रुपए से बढ़कर 15 लाख रुपए हो गई। इससे घर-परिवार की जरूरतें पूरी होने लगीं। साथ ही, बच्चों की शिक्षा, पक्के घर का निर्माण और कई नई मशीनें भी खरीदने का काम शुरू किया। अब शरद नागरे का नाम पूरे इलाके में है। उनसे सलाह लेकर बाकी किसानों ने भी आधुनिक खेती की ओर रुख किया है। इससे बाकी किसानों को भी गजब का फायदा हो रहा है।

साइकिल हो द्वारा कतारों के बीच में लगे खरपतवारों को निकाला गया

गेहूं फसल में अन्तः कर्षण क्रिया पर प्रशिक्षण

शिवपुरी। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के द्वारा दिनांक 20-12-2024 को कृषि महाविद्यालय के छात्रों को गेहूँ फसल पर बुवाई के 25-30 दिनों में फसल-खरपतवारों की प्रतियोगिता को कम करने के लिए क्रांतिक अवस्था में अन्तः कर्षण क्रिया द्वारा जल, स्थान, पोषक तत्व एवं प्रकाश संश्लेषण को बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया।

अन्तः कर्षण क्रिया अंतर्गत साइकिल हो द्वारा कतारों के बीच में लगे हुए चौड़ी एवं सकरी पत्ती के खरपतवारों को निकाला गया एवं विरलन क्रिया द्वारा फसल सघनता को कम किया गया, जिससे प्रति हेक्टेयर उचित पौध संख्या प्राप्त हो सके। गेहूँ की फसल में प्रमुख रूप से बथुआ, खरतुआ, कृष्ण नील, चटरी-मटरी, हिरणखुरी, सतगढ़िया, गेंहूँसा, जंगलीजई, आदि खरपतवारों को विद्यार्थियों ने पहचान कर खेत से निकाला। यदि समय पर गेहूँ की फसल में खरपतवार नियंत्रण कर लिया जाता है तो उत्पादन 50-60 कु./हे. प्राप्त किया जा सकता है।

इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता, डॉ. डीएस तोमर, डॉ. एमके नायक, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. बीएस किरार साथ ही वैज्ञानिक डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. एसके सिंह, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. सतेन्द्र कुमार, डॉ. एसके जाटव एवं जयपाल छिगारहा उपस्थित रहे।

रोजगार का जरिया बन सकता है मछली का अचार

केवीके में मत्स्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन पर तीन दिवसीय कार्यशाला

टीकमगढ़। मूल्य संवर्धन वर्तमान समय में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में चर्चा का विषय बना है। मछली प्रसंस्करण उद्योग के द्वारा जहां काफी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है वहीं दूसरी ओर मछली से निर्मित मूल्यवर्धित उत्पाद के द्वारा आजीविका एवं स्वरोजगार की काफी संभावनाएं हैं। मछलियों से निर्मित उत्पाद की लोकप्रियता द्वारा मछली पालकों की आय बढ़ाई जा सकती है साथ ही साथ सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी कुपोषण जनित बीमारियों एवं समस्याओं पर लगाम लगाइ जा सकती है। इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए, कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ एवं रायकवार आदिवासी परिषद, टीकमगढ़ के संयुक्त प्रयास से रोजगार एव आजीविका स्थापित करने के लिए मत्स्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन पर कौशल विकास कार्यशाला कार्यशाला, 20 से 22 दिसम्बर 2024 तक केवीके, टीकमगढ़ मे आयोजित की गई। इस कार्यशाला का संचालन कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवम प्रमुख डॉ. वीरेन्द्र सिंह किरार एव रायकवार आदिवासी परिषद, टीकमगढ़ के सकिय सदस्य गोपाल दास कडा के जिले मे मछली से बने रेडी टू ईट उत्पाद की सम्भावना और उसके द्वारा सम्भावित स्थानीय मछली पालको के लिये आजीविका एवं स्वरोजगार की सोच पर कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के मत्स्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. सतेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक (मात्स्यिकी) के द्वारा सफ्लतापूर्वक किया गया।

जताई गंभीर चिंता...अब फसलों की फ्लड सिंचाई पर लगेगा ब्रेक

कृषि वैज्ञानिकों ने कहा-देश के 151 जिले पानी की कमी से जूझ रहे

भोपाल। जागत गांव हमार

जलवायु बदलावों का असर तेजी से भूजल स्तर पर भी गिरावट के रूप में दिखने लगा है। जबकि, अनियंत्रित तरीके से दोहन ने भूजल स्तर को नीचे जाने में मदद की है।

कृषि वैज्ञानिकों ने कहा कि देश के 151 जिले पानी की कमी से जूझ रहे हैं। उन्होंने चिंता जताई है कि जल्द ही फसलों की सिंचाई के लिए वर्तमान में इस्तेमाल की जा रही फ्लड सिंचाई विधि को बंद करना पड़ेगा। वैज्ञानिकों ने वॉटर एफिसिएंट क्रॉप की बुवाई करने की सलाह किसानों को दी है। बताया गया हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में जरूरत से ज्यादा पानी जमीन से निकाला गया है, जो बेहद खतरनाक स्थिति की ओर ले जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि में वॉटर एफिशिएंट क्रॉप कल्टीवार को लेकर उच्चस्तरीय समिति की बैठक कृषि वैज्ञानिकों ने सिंचाई के लिए पानी की घटती उपलब्धता और गिरते भूजल स्तर पर चिंता जताई है। विवि के कुलपति प्रो बीआर काम्बोज ने कहा कि जल संसाधनों का संरक्षण समय की जरूरत बन गई है। वैज्ञानिकों ने कहा कि जल संसाधनों के दोहन को रोकना, खरीफ मौसम में कम पानी में उगाये जानी वाली किस्मों की बोवनी करना होगा। इससे जुड़े शोध की समीक्षा करने के साथ ही अन्य संस्थानों के साथ रिसर्च को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

कुलपति ने कहा कि जल जैसे अमूल्य प्राकृतिक संसाधन के कृषि में सदुपयोग करने व उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप कृषि योजना बनाकर प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के महत्व पर गहनता से विचार करना होगा। उन्होंने बताया कि खरीफ के मौसम में कम पानी में उगाई जाने वाली व बेहतर उत्पादन देने वाली किस्मों को उगाने के लिए उन्नत बोवनी विधियां अपनाकर जल संरक्षण करना होगा। उन्होंने कहा कि भावी पीढ़ी के उज्जवल भविष्य के लिए जल संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। बायोसैंसर जैसी आधुनिक तकनीक का जल संसाधनों में बेहतर उपयोग किया जा सकता है।

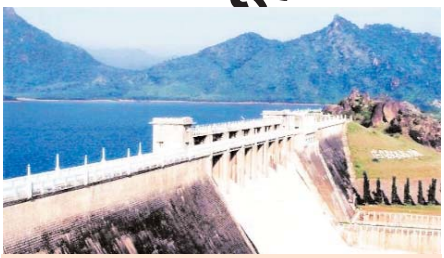

फसल बदलाव का सुझाव

मक्का की फसल धान वाले क्षेत्रों में पानी बचाने के लिए एक बेहतर विकल्प हो सकती है। मक्का का साईलेज 70-80 दिन में तैयार हो जाता व चारे की कमी के दिनों में पशुओं के लिए उपयोगी होता है। गेहूं वाले क्षेत्रों में राया की फसल उगा कर पानी की बचत की जा सकती है। राया के बाद छोटी अवधि की फसल जैसे मूंग उगाई जा सकती है जिससे मुनाफा बढने के साथ संसाधनों की बचत भी होगी। पद्मश्री डॉ.बीएस ढिल्लों ने बताया कि खरीफ के मौसम में धान की कम पानी में उगाई जाने वाली व धान की सीधी बोवनी के लिए किस्मों को अपनाना चाहिए। खरीफ में उगाई जाने वाली अन्य फसलें मूंग, अरहर, बाजरा की भी कम पानी में बेहतर पैदावार देने वाली किस्मों को अपनाने की बात किसानों से कही है।

जरूरत से ज्यादा निकाला जा रहा जमीन से पानी

डॉ. सीएल आचार्य ने बताया कि भूमिगत जल संसाधनों का अधिक दोहन हो रहा है जिसके चलते पूरे देश में 151 जिले पानी की कमी से जूझ रहे हैं। साथ ही भूमिगत जल में पाए जाने वाले हानिकारक तत्व भी होते है। बीते साल हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में क्रमश: 8.69, 16.98 व 11.25 बिलियन क्यूबिक मीटर भूमिगत जल निकाला जा सकता था, जबकि 11.8, 27.8 व 16.74 बिलियन क्यूबिक मीटर भूमिगत जल निकाला गया, जो अनुमान से भी अत्यधिक था। उन्होंने बताया कि आगे ऐसा समय भी आयेगा जब फ्लड सिंचाई बंद करनी होगी। फ्लड सिंचाई फसलों को पानी देने की एक विधि है जिसमें पानी को जमीन के ऊपर खेत में बहने दिया जाता है। अधिक दक्षता वाले सिंचाई के तरीके जैसे टपका, फव्वारा सिंचाई, ड्रिल और स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी तकनीकों को अपनाना होगा।

चैनल किसानों को उक्त सभी जानकारियां उपलब्ध

कृषि मंत्रालय का वॉट्सऐप चैनल, जहां मिलेगा खेती किसानी से जुड़ा हर अपडेट

भोपाल/नई दिल्ली। किसानों का काम आसान बनाने के लिए केंद्र सरकार ने कृषि मंत्रालय का वॉट्सऐप चैनल बनाया है। चैनल किसानों को उक्त सभी जानकारियां आपकी उंगलियों पर उपलब्ध करा रहा है। इसके लिए आपके पास एक स्मार्टफोन होना चाहिए। वॉट्सऐप चैनल पर आपको कृषि योजनाओं में पीएम किसान सम्मान निधि की किस्त को लेकर, ई-केवाईसी, फार्मर रजिस्ट्री, पीएम फसल बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, ड्रोन दीदी, लखपति दीदी जैसी तमाम योजनाओं की जानकारी मिल सकेगी।

मौसम बदलाव पर भी मिलेगा अपडेट- साथ ही मौसम में बदलाव होने पर किसानों को फसलों के प्रबंधन, कटाई के बाद रख-रखाव से जुड़ी जानकारी भी मिलेगी। समय-समय पर खाद-बीज को लेकर भी अपडेट मिलता रहेगा। ज्यादातर किसान जानकारी के अभाव में सालों से इस्तेमाल होते आ रहे डीएपी का छिड़काव ही करते हैं, लेकिन यह चैनल आपको डीएपी के अन्य विकल्पों की जानकारी देगा, जिससे आपकी जमीन कोफायदा होने के साथ ही आपकी खेती की लागत भी कम होगी।

वॉट्सऐप पर सर्च करें ये नाम

किसान अक्सर ऐसी योजनाओं की जानकारी से वंचित रह जाते हैं। इन सभी जानकारियों को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के वॉट्सऐप चैनल एग्रीगोल पर जुड़कर हासिल कर सकते हैं। इसके लिए आपको वॉट्सऐप में चैनल ऑप्शन पर जाकर एग्रीगोल सर्च कर इसे फॉलो करना होगा। अब इस सेक्शन में आपको रोजाना सभी अपडेट्स मिलते रहेंगे।

जागत गांव हमार, सलाहकार मंडल

1. **प्रो. डा. केआर मौर्य, पूर्व कुलपति,** राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसासमस्तीपुर (बिहार) एवं महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान) ईमेल-kuber.ram@gmail.com, मोबा- 7985680406
2. **प्रो. डा. गैब्रियल लाल, प्रोफेसर,** आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग सैम हिंगिन बॉटम यूनिवर्सिटी आफएग्रीकल्चर, टेक्नालोजी एंड साइंसेज, प्रयागराज, उप्र। ईमेल- द्दड्डद्धड्डहiyal.lal @shiats.edu.in, मोबा- 7052657380
3. **डा. वीरेन्द्र कुमार,** प्रोफेसर एंड हेड, पौध रोग विज्ञान विभाग, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर ढोली, मुजफ्फरपुर बिहार। ईमेल- birendraray@gmail.com मोबा- 8210231304
4. **डा. नरेश चन्द्र गुप्ता, वैज्ञानिक,** मृदा विज्ञान, कृषि महाविद्यालय बिरसा, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कॉके, रॉची झारखण्ड। ईमेल- ncgupt-abau@gmail.com, मोबा- 8789708210
5. **डा. देवेंद्र पाटिल, वैज्ञानिक** (शस्य विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, सीहोर (मध्यप्रदेश) सेवनिया, इछावर, सिहोर (मप्र) ईमेल- dpatil889@gmail.com, मोबा- 8827176184
6. **डा. आशुतोष कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर,** एग्री विजनेस मैनेजमेंटकृषि अर्थशास्त्र विभाग, एकेएस,विश्वविद्यालय, सतना, मप्र ईमेल- kumar.ashu777@gmail.com, मोबा- 8840014901
7. **डा. बिनीता सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर** आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग एकेएस विश्वविद्यालय, सतना, मप्र ईमेल- singhvineeta123@gmail.com, मोबा- 8840028144
8. **डा. आरके शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर,** परिजीवी विज्ञान विभाग, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना, बिहार। ईमेल- drrksharmabvc@gmail.com, मोबा- 9430202793
9. **डा. दीपक कुमार, सहायक प्राध्यापक,** मृदा एवं जल संरक्षण अभियंत्रिकी विभाग, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर, उत्तराखण्ड। ईमेल- deepak.swce.cot.gbpuat@gmail.com, मोबा- 7817889836
10. **डा. भारती उपाध्याय, विषय वस्तु विशेषज्ञ** (शस्य विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, विरौली, समस्तीपुर, बिहार। ईमेल-bharati.upadhya@rpcau.ac.in, मोबा- 8473947670
11. **रोमा वर्मा,** सब्जी विज्ञान विभाग महात्मा गांधी उद्यानिकी एवं् वानिकी विश्वविद्यालय, पाटन, जिला- दुर्ग, छत्तीसगढ़। ईमेल- romaverma35371@gmail.com, मोबा- 6267535371

ठंड के दिनों में खिलाएं हरा चारा, ज्यादा दूध देंगी गाय-भैंस

भोपाल। पशुपालन का काम अब गांव-देहात से लेकर शहरी क्षेत्र के लोगों का प्रमुख कारोबार बनता जा रहा है, लेकिन पशुपालन में मौसम के अनुसार पशुओं को स्वस्थ रखना और पौष्टिक आहार देना सबसे बड़ी चुनौती होती है। सर्दी के दिनों में पशुओं ऊर्जा, प्रोटीन और अन्य पोषक तत्वों की जरूरत बढ़ जाती है। ठंड के दिनों में आमतौर पर देशी पशुओं को 8-10 किलो आहार की रोजाना जरूरत होती है। इसलिए जरूरी है कि सर्दियों के मौसम में पशुपालक अपने पशुओं को हरे चारे के रूप में नेपियर चारा को खिलाएं। साथ ही आज हम आपको बताने वाले हैं कि नेपियर चारे को कैसे बोएं और इसको खिलाने से पशुओं के दूध उत्पादन में कितनी बढ़ोतरी होगी। गन्ने की तरह दिखने वाली सुपर नेपियर घास मूल रूप से थाईलैंड में उगने वाली घास है। जिसे 'हाथी घास' के नाम से भी जाना जाता है। इसके पीछे कारण यह है कि इसका आकार काफी बड़ा होता है। यह घास किसानों और पशु पालकों के लिए आर्थिक रूप से बेहद फायदेमंद है। हरे घास में नेपियर घास पशुओं के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। यह घास न केवल पशुओं में दूध उत्पादन को बढ़ाती है बल्कि इससे पशुओं का स्वास्थ्य भी उत्तम रहता है।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक: अरविंद मिश्रा,संपर्क -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)